हिंदी पाठ्यपुस्तक-8

1. जग को पथ दिखलाने वाला

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. ध्रुवतारा
2. धूप और खुली हवा को।
3. जन्मभूमि पर।
4. आसमान पर राह बनाने से आशय है– जीवन को उन्नतिशील बनाना।
5. कवि भारतभूमि पर जन्म लेने को अपना सौभाग्य मानता है।

- **लिखित**

1. भारतीय वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा पर अपना परचम फहराया है और अब मंगल ग्रह पर जाने की तैयारी कर रहा है।
2. भारतवासियों का नारा है– "हम न झुकेंगे, हम न रुकेंगे"।
3. ध्रुवतारा, पृथ्वी, चन्द्रमा, मंगल, धूप, हवा, चंदन, आँधी, बिजली, पर्वत, सागर आदि प्रकृति के उपादानों का प्रयोग हुआ है।
4. मातृभूमि के लिए ध्रुवतारे की उपमा कवि ने इसलिए दी है क्योंकि जिस प्रकार से समस्त संसार के नागरिकों को ध्रुवतारा सही मार्ग दिखाता है यानि ध्रुव तारा सदैव उत्तर दिशा में उदित होता है जिससे लोगों को सही दिशा का पता चलता है उसी प्रकार से भारत के विश्वगुरु बनने पर ही सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन दिखाया जा सकता है।
5. इस आशय की पंक्तियाँ निम्नवत् हैं–
   पर्वत-पर्वत पाँव बढ़ाता,
   सागर की लहरों पर गाता।
   आसमान में राह बनाता,
   चलता मन बनजारा है।।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' के पाठ 'जग को पथ दिखलाने वाला' से लिया गया है। इसके कवि आरसीप्रसाद सिंह हैं। इसमें भारतवासियों के कर्मठपन को दर्शाया गया है। वे निरंतर आगे बढ़ते हुए नवयुग का निर्माण करेंगे।

व्याख्या – कवि कहता है कि चाहे आँधी शोर मचाए या बिजली डराने का प्रयास करे किंतु भारतवासी झुकने और रुकने वाले नहीं हैं। यह हमारा दृढ़ संकल्प है।

आगे कवि कहता है कि हमारा साहस पर्वतों की दुर्गम कठिनाइयों को पार करता है। सागर की लहरों के साथ आगे बढ़ता है और आकाश में अपनी राह बना लेता है।

आगे कवि कहता है कि अब चाँद और मंगल तक पहुँचने का हमारा सपना भी साकार होने जा रहा है। ये पंक्तियाँ भारत की वैज्ञानिक प्रगति की ओर संकेत करती हैं। अमर तिरंगे को ऊँचा लहराकर नए युग ने हम भारतवासियों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया है।

- **अपनी समझ से**

1. (ग)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. मन को बनजारा इसलिए कहा गया है क्योंकि बनजारों की तरह मन भी कभी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता है। वह निरंतर नई कल्पनाओं की ओर बढ़ता है।
2. भारतभूमि, विविधता, संस्कृति और परंपराओं से समृद्ध है। यहाँ अनेक रीति-रिवाजों और अनेक भाषाओं के बावजूद भी अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। यह वीरों, संत-महापुरुषों की भूमि है। भारत प्राकृतिक सौन्दर्य, ज्ञान, अध्यात्म और वैज्ञानिक प्रगति के लिए प्रसिद्ध है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का अर्थ है कि हमारा साहस और आत्मविश्वास इतना प्रबल है कि हम कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी प्रसन्नता और उत्साह बनाए रखते हैं।
2. इस पंक्ति के माध्यम से कवि गर्व के साथ कहता है कि हमें भारतभूमि में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमें अपने देश की महान संस्कृति और आदर्शों पर गर्व

करना चाहिए तथा देश के विकास में अपना योगदान देना चाहिए।

3. इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि हम भारतीयों ने किसी की दासता स्वीकार नहीं की, बल्कि उसके विरुद्ध डटकर सामना किया है। हमारे कदम कठिनाइयों और अड़चनों के सामने रुकने वाले नहीं हैं। यह पंक्ति भारतीयों के आत्मबल का परिचय कराती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. ध्रुवतारा
2. आँचल
3. जन्मभूमि
4. आँधी
5. बिजली

- **सुमेलन**

1. (iii), 2. (iv), 3. (v), 4. (ii), 5. (i)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. भारत की सुंदरता अनेक विशेषताओं के कारण अद्वितीय है–
   - उत्तर के ऊँचे-ऊँचे हिमालय पर्वत देश की रक्षा करते हैं।
   - पवित्र गंगा-यमुना जैसी नदियाँ जीवनदायिनी हैं।
   - यहाँ की विविध संस्कृति, वेशभूषा, भाषा और त्योहारों का समागम है।
   - यह महान वीरों और सन्तों की जन्मभूमि है।
2. हम देश की प्रगति और विकास में निम्न योगदान दे सकते हैं–
   - ईमानदारी से पढ़ाई कर अच्छे नागरिक बन सकते हैं।
   - स्वच्छता का ध्यान रख सकते हैं।
   - पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं।
   - दूसरों की सहायता कर सकते हैं।
   - कुछ अच्छे-अच्छे काम करके देश को आगे बढ़ा सकते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **पर्यायवाची शब्द**

(क) सागर – समुद्र, सिंधु
(ख) पहाड़ – पर्वत, गिरि
(ग) आसमान – नभ, आकाश
(घ) बिजली – विद्युत, तड़ित
(ङ) आँख – नयन, नेत्र
(च) हवा – वायु, पवन।

2. **विलोम शब्द**

(क) अमर – मर्त्य
(ख) खुशबू – बदबू
(ग) भीगी – सूखी
(घ) खुली – बंद
(ङ) जन्म – मृत्यु
(च) एक – अनेक

3. **वर्ण विच्छेद**

(क) भारत –भ्+आ+र्+अ+त्+अ
(ख) सौभाग्य –स्+औ+भ्+आ+ग्+य्+अ
(ग) दिखलाते –द्+इ+ख्+अ+ल्+आ+त्+ए
(घ) ललकारा –ल्+अ+ल्+अ+क्+आ+र्+आ

4. **वचन परिवर्तन**

(क) आँधी – आँधियाँ
(ख) लहरें – लहर
(ग) आँख – आँखें
(घ) राह – राहें
(ङ) तारे – तारा
(च) हवाएँ – हवा

- **क्रियाकलाप आधारित**

4. बनजारा भारत की एक घुमन्तू जाति है। जो मुख्य रूप से राजस्थान के मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्र में उत्पन्न मानी जाती है। ये मुख्य रूप से बैलों के कारवाँ के साथ नमक, अनाज और सामान ढोने वाले प्रमुख व्यापारी थे।

2. माँ की याद

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. गर्मियों की छुट्टियों में चेतन के घर मौसाजी आए।

2. क्योंकि वह अपनी माँ से दूर नहीं होना चाहता था।
3. मौसाजी के घर में दो बच्चे थे– रजत और लावण्या।
4. रजत ने किचन में चटनी बनायी थी।
5. चेतन रजत भैया के किचन में होने का नाम सुनकर ठिठका।

- **लिखित**

1. चेतन को मौसाजी ने यह कहकर राजी किया कि जब तुम्हें माँ की याद आए तो माँ कहना और मौसी हाजिर हो जाएँगी।
2. रजत को फर्श पर पोंछा लगाते देखकर चेतन को आश्चर्य हुआ।
3. कैरम खेलते समय चेतन का मन अनमना हो गया था क्योंकि उसे अपनी माँ की याद आ रही थी।
4. माँ से वीडियोकॉल पर चेतन ने कहा कि माँ मैं ठीक हूँ, नाश्ता करने जा रहा हूँ। मैंने आपके लिए कुछ सोचा है, जब आऊँगा तब बताऊँगा।

- **प्रत्यास्मरण**

1. क्योंकि माँ की याद आने के कारण चेतन का गला रूँध सा गया था, वह रूआँसा हो गया था।
2. माँ को मोबाइल पर चेतन का चेहरा साफ दिखाई दे रहा था।
3. चेतन ने स्वयं को पूरी तरह बदलने का निश्चय कर लिया था।
4. मौसी ने एक पकौड़ी मुँह में रखकर चेतन की रुलाई को आने नहीं दिया।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 4. (क)
2. (ग) 5. (ग)
3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. माँ ने ऐसा इसलिए कहा होगा ताकि वह चेतन को मौसा जी के साथ भेज सके और इस प्रकार चेतन माँ से अलग रहकर जीने का अभ्यास कर सके।
2. चेतन के मन में हेकड़ी और उपहास इसलिए था क्योंकि वह अपने घर में सबका लाड़ला था। वह घर के किसी भी काम में हाथ नहीं बँटाता था। उसे लगता था कि घर के काम लड़कों को नहीं करने चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि मेरा मन उदास है और मुझे किसी (माँ) की याद आ रही है।
2. यह पंक्ति गहरे लगाव और तड़प को दर्शाती है। चेतन अपनी माँ से बात करने के लिए व्याकुल है। इसीलिए वह मौसी जी से अनुरोध कर रहा है।
3. इस पंक्ति का आशय यह है कि चेतन अपनी माँ से दूर जाने पर एक तो माँ के लिए बेचैन हो गया था तथा दूसरे वे मौसीजी के यहाँ से सीखी कुछ बातें जैसे माँ के साथ काम में हाथ बँटाना, उनके साथ विनम्र भाव अपनाना आदि के द्वारा वह उन्हें खुश करना चाहता था।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मोबाइल 2. मौसा जी
3. घर 4. मौका
5. फीका

- **किसने, किससे कहा?**

1. माँ ने चेतन से
2. चेतन ने रजत से
3. चेतन ने रजत से
4. रजत ने चेतन से
5. लावण्या ने चेतन से

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मैं चेतन के स्थान पर होता तो अपने कुछ गुण मौसी के बच्चों को सिखाता और उनके अच्छे गुण स्वयं ग्रहण करता।
2. जब मैं माँ को छोड़कर रिश्तेदारी में अकेला रहता हूँ तो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, मन उदास रहता है।
3. हाँ, मैं अपनी माँ के साथ घर के कामों में हाथ बँटाना चाहता हूँ। मैं झाड़ू लगाना, बर्तन धोना, सब्जी काटना, साफ-सफाई करना आदि छोटे-मोटे काम करना पसंद करूँगा।
4. इसके उत्तरदायी कारण निम्नलिखित थे–
   - वह घर के कामों को छोटा समझता था।

● उसे घर के काम उसकी शान के खिलाफ लगते थे।
● उसे माँ की मेहनत का सही मूल समझ नहीं आता था।
● उसे संस्कार और जिम्मेदारी का बोध नहीं था।

● **भाषा आधारित**

1. (ख) पूजा के लिए घर
   (ग) गंगा का जल
   (घ) ग्राम के वासी
2. (क) रामू की नौकरी लगने पर घर में घी के दिए जलाए गए।
   (ख) पुरस्कार मिलने के बाद केतन के पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।
   (ग) अपने बच्चों की उन्नति देखकर माँ-बाप फूले नहीं समाते।
   (घ) अचानक शिक्षक को देखकर बच्चे भौचक्के रह गए।
3. चेतन रास्ते भर में भी यही सोचता आ रहा था कि वैसे तो आएदिन मौसी, रजत भैया और लावण्या बहिन से मोबाइल पर बात होती ही रहती है। व्हाट्सऐप पर खूब वीडियो कॉल भी करते हैं, पर साथ बैठकर बतियाने तथा गप्पें लड़ाने की तो बात ही कुछ और है? सफ़र में कोई पाँच घंटे लगे होंगे। मौसाजी ने पूरा ख्याल रखा। चेतन जब वहाँ पहुँचा तो उसका स्वागत हुआ, लेकिन कुछ समय बाद माँ की याद आना शुरू हुई, तो सब फीका लगने लगा।
4. (क) गुब्बारे (घ) गोटियाँ
   (ख) घोड़े (ङ) चीजें
   (ग) बगीचे (च) छुट्टियाँ
5. **शब्द** **अर्थ**
   (क) माँ जन्म देने वाली
   वाक्य-प्रयोग– हमें अपनी माँ का सम्मान करना चाहिए।
   (ख) भाई भ्राता या प्रिय संबंधी
   वाक्य-प्रयोग– मेरा भाई मेरे हर काम में मदद करता है।
   (ग) बहन सहोदरी या प्रिय स्त्री
   वाक्य-प्रयोग– मेरी बहन मुझे बहुत प्यार करती है।
   (घ) घर रहने का स्थान
   वाक्य-प्रयोग– हमें अपने घर को स्वच्छ रखना चाहिए।

● **क्रियाकलाप आधारित**

1. प्रिय मित्र अमित,
   सप्रेम नमस्ते!
   मैं यहाँ ठीक हूँ। यहाँ आकर मुझमें बदलाव आया है। पहले मैं घर के कामों को बेकार समझता था, पर अब मुझे माँ की मेहनत का असली मूल समझ आया है। एक दिन मैं बीमार पड़ गया और माँ पास नहीं थी, तब मुझे एहसास हुआ कि माँ क्या होती है। अब मैं निश्चय कर चुका हूँ कि घर लौटकर माँ के कामों में हाथ बँटाऊँगा। मुझमें यह बदलाव उसी घटना से हुआ है। शेष बातें मिलने पर होंगी।
   तुम्हारा मित्र
   चेतन
2. **सूजी का हलवा बनाने की विधि**
   सामग्री – सूजी, घी, चीनी, पानी/दूध, काजू, किशमिश।
   विधि– सबसे पहले कड़ाही में घी गर्म करें। उसमें सूजी डालकर हलका भूरा होने तक भूनें। फिर पानी या दूध डालें और चलाते रहें। जब सूजी पक जाए तो चीनी डालें। अंत में मेवे डालकर हलवे को अच्छी तरह मिला लें। स्वादिष्ट हलवा तैयार है।
3. छात्र स्वयं करें।

3. एलिश की यात्रा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. एफिम और एलिश रूस के एक गाँव में रहते थे।

2. एफिम ने बहुत सा धन लिया, जबकि एलिश ने केवल उतना ही धन लिया, जितना आवश्यक था।
3. एफिम दया रहित था जबकि एलिश दयावान था।
4. बीमार बच्चे ने कहा– "बाबा, हम बहुत भूखे हैं, हमें रोटी दो।" बीमार व्यक्ति ने कहा कि हमें भुखमरी ने घेर रखा है। मेरा पुत्र भूख से मर रहा है।
5. एलिश ने सुना कि स्त्री अपने बेटे से कह रही थी– "बेटा! यह मनुष्य नहीं, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।"

- **लिखित**

1. एफिम और एलिश दोनों घनिष्ठ मित्र थे। दोनों ने साथ-साथ यरूशलम की यात्रा करने का निर्णय लिया।
2. एलिश ने सुबह होते ही घर की साफ-सफाई की, चूल्हा जलाया और भोजन बनाया। उनके लिए एक गाय खरीदी और खेत जोतने के लिए एक घोड़ा खरीदा। साथ ही फसल आने तक के लिए अनाज खरीदा।
3. एफिम ने गिरिजाघर में दीपकों के प्रकाश के पीछे एक ऐसा दृश्य देखा, जिससे वह आश्चर्यचकित रह गया। वहाँ उसने एलिश की तरह एक पुरुष देखा।
4. एफिम को स्त्री ने एलिश के बारे में बताते हुए कहा– मैं नहीं जानती वह कौन था, मनुष्य अथवा देवदूत। वह हम सबसे प्रेम करता था। वह अपना नाम बताए बिना यहाँ से चला गया। यदि वह नहीं होता, तो हम लोग मर ही गए होते।
5. अपनी यात्रा को लेकर एफिम को इस बात का संदेह था कि उसका शरीर वहाँ पहुँचा, किन्तु उसकी आत्मा वहाँ पहुँच सकी या नहीं। उसे पता चल गया था कि मानव-सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है जिससे वह विमुख होकर यरूशलम की यात्रा पर गया था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. ईश्वर की सच्ची सेवा मानव-सेवा है।
2. एफिम ने एलिश को चर्च के भीतरी भाग में दीपमाला के पीछे खड़ा देखा था।
3. एफिम के अनुसार, यरूशलम एलिश की आत्मा पहुँची थी और एफिम का शरीर।
4. एलिश सच्चा तीर्थयात्री और ईश्वर का प्रिय था।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (ख)
3. (ग)
4. (ग)
5. (घ)

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि एलिश यरूशलम न जा पाने को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर रहा है। वह परिस्थिति के अनुसार स्वयं पर संतोष प्रकट कर रहा है।
2. "बेटा, यह मनुष्य नहीं, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।"
इसका आशय है कि जिस व्यक्ति के बारे में बताया जा रहा है वह बहुत ही नेकदिल और दयालु है। उसके अच्छे व्यवहार और त्याग के कारण उसे देवदूत की संज्ञा दी जा रही है। ऐसे सज्जन लोग संसार में बहुत कम मिलते हैं।
3. इस पंक्ति का आशय है कि व्यक्ति का शरीर तो कहीं पर पहुँच सकता है लेकिन सच्ची आत्मा का पहुँचना उसके कर्मों पर निर्भर करता है। मानव सेवा ही सच्ची सेवा है और इससे विमुख होकर व्यक्ति दिखावे को करके ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. यरूशलम, 2. सेवा, 3. चर्च, 4. यात्री, 5. तीर्थयात्री।

- **किसने, किससे कहा?**

1. एलिश ने एफिम से, 2. बालक ने एलिश से, 3. एलिश ने एफिम से, 4. माँ ने बेटे से, 5. एफिम ने एलिश से।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. एफिम झोंपड़ी के बाहर ही बैठा रहा, वह अंदर भी नहीं आया, जबकि एलिश वहीं रुक गया क्योंकि दोनों के विचारों में विरोधाभास था। एफिम को धन का घमण्ड था और वह तीर्थयात्रा को ही महत्त्वपूर्ण मान रहा था। वहीं एलिश एक दयावान और दूसरों के दुख-दर्द को महसूस करने वाला

व्यक्ति था। एलिश के लिए मानव सेवा ही सच्ची तीर्थयात्रा थी।

2. मेरे विचार से ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि यरूशलम पहुँचना यात्रा का बाहरी रूप है, परंतु सच्ची तीर्थयात्रा का संबंध मन की पवित्रता से है। यही कारण था कि एलिश यरूशलम पहुँचा ही नहीं, फिर भी उसकी आत्मा उसी प्रकार पवित्र हो गई जैसे तीर्थयात्रा करने के पश्चात होती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) बारहवीं
   (ख) एक दर्जन
   (ग) सौ रुपये
   (घ) कई
   (ङ) सभी
2. (क) घनिष्ठ – घ्+अ+न्+इ+ष्+ठ्+अ
   (ख) दयालु – द्+अ+य्+आ+ल्+उ
   (ग) छत्तीस – छ्+अ+त्+त्+ई+स्+अ
   (घ) देवदूत – द्+ए+व्+अ+द्+ऊ+त्+अ
   (ङ) ऊष्मा – ऊ+ष्+म्+आ
   (च) स्वागत – स्+व्+आ+ग्+अ+त्+अ
3. (क) अद्वितीय (ख) निःशुल्क
   (ग) दैनिक (घ) अग्रणी
   (ङ) भावी
4. (क) पर्याप्त – हमें परीक्षा की तैयारी के लिए पर्याप्त समय मिला।
   (ख) तीर्थयात्रा – श्रवणकुमार अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा पर ले गए।
   (ग) अनुमति – माता-पिता की अनुमति के बगैर बाहर नहीं जाना चाहिए।
   (घ) गिरजाघर – रविवार को लोग प्रार्थना करने गिरजाघर जाते हैं।
   (ङ) वातावरण – शांत वातावरण पढ़ाई के लिए अच्छा होता है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

2. मानव सेवा के विषय में नारे/सूक्तियाँ
   - मानव सेवा ही पूजा है।
   - परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।
   - दया और करुणा ही मानवता की पहचान हैं।
   - सेवा का मार्ग ही सच्चा मार्ग है।

4. तिनकों के साए

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** जरूरत, परवरिश, कारोबार, वजीफा, सर्टिफिकेट, स्थगित, कल्पना, बीहड़

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अज्जू, तनु और उसकी माँ पिता के आने की राह देखते थे।
2. अज्जू के पिताजी अफ्रीका कारोबार करने गये थे।
3. बड़ा होकर अज्जू इन्जीनियर बनना चाहता था।
4. तनु के विवाह के गहने-रुपये और वस्त्र अफ्रीका (नैरोबी) से आये थे।
5. नैरोबी पहुँच कर अज्जू एक वृद्ध व्यक्ति से मिला।

- **लिखित**

1. नैरोबी से बड़ा करुणा और दर्द भरा पत्र आया था। वह पत्र अस्पताल में लिखा गया था। "रोग काबू से बाहर है, इसलिए डॉक्टर ने ऑपरेशन की सलाह दी है।" लगता है, चंद दिनों का ही मेहमान हूँ। उसके बाद तुम लोगों का क्या होगा, इस कारण परिवार के सभी लोग परेशान हो गए।
2. घर में भेजे गए पत्र में पिता ने अज्जू के बारे में बताया अब वह पूरे बारह साल का हो गया है। छठी कक्षा में अव्वल आने पर उसे वजीफा मिलेगा। तनु अब अठारह साल पार कर रही है। उसकी भी शादी करनी है।

"इस समय तो नहीं, हाँ अगले साल तनु की शादी पर अवश्य आऊँगा।" दहेज की चिंता न करना। कहीं अच्छे वर की खोज करना।

3. जिले में प्रथम स्थान पाकर हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने पर अज्जू के लिए इनाम में अफ्रीका से कीमती कैमरा आया। गर्म सूट का कपड़ा आया। सुंदर घड़ी आई और एक मर्मस्पर्शी लंबा पत्र आया।
4. पढ़ाई पूरी करने के बाद हारकर इस बार अज्जू ने ही अफ्रीका जाने का कार्यक्रम बना लिया। अकस्मात् पहुँचकर पापा को चौकाने की योजना बनाई। उसके मन में एक गहरी उत्कंठा थी कि पापा उसे देखकर कितने चकित होंगे।
5. वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू को उसके पिता के बारे में बताया कि मैं तुम्हारे पिता का जिगरी दोस्त हूँ। बहुत लंबे समय तक हम साथ-साथ रहे। उसी ने मुझे भारत से यहाँ बुलाया था। मुझे सारा काम सिखाया। हमने साझे में व्यापार शुरू किया। नैरोबी की आज यह बहुत अच्छी फर्म है। यह सब उसी की बदौलत है। तुम्हारे पिता की मृत्यु आज से पंद्रह-बीस साल पहले हो जाती तो क्या होता? तुम अनाथ हो जाते। तुम इतने हौसले से पढ़ नहीं पाते।

- **प्रत्यास्मरण**

गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. गद्यांश के अनुसार लोग बीहड़ वनों को सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे पार कर जाते हैं।
2. युवक के पिता तो तब ही गुजर गए थे। अपने साझा कारोबार से, उनके हिस्से के पैसे नियमित रूप से भेजता रहा।
3. वृद्ध कितने ही वर्षों से इसी दिन के इंतजार में था।
4. पुत्र ने जब वृद्ध को गले लगाया तो वह दीवार पर टँगे एक धुँधले चित्र को देखकर मुस्करा रहे थे।
5. वृद्ध ने युवक से कहा- अब तुम बड़े हो गये हो। अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बँटाओ। मेरा वचन पूरा हो गया, जो मैंने उसे मरते समय दिया था।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (ख)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. कहानी के अनुसार, अज्जू की बहन को अच्छा वर इसलिए मिला, क्योंकि उसके पिता के मित्र ने परिवार को मृत्यु का समाचार छिपाकर उनके सारे कर्त्तव्य निभाए और एक अच्छा रिश्ता ढूँढ़ा। आज के समाज के परिप्रेक्ष्य में यह दर्शाता है कि घर परिवार की प्रतिष्ठा सामाजिक समर्थन और सही समय पर लिए गए निर्णय विवाह संबंधों को सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
2. पिता की मृत्यु के बाद भी उनके मूल्यों, आदर्शों और उनके मित्र द्वारा निभाई गई जिम्मेदारियों ने परिवार को टूटने से बचाया। पिता की अनुपस्थिति में भी उनके मित्र ने एक अभिभावक की भूमिका निभाई, जिससे परिवार को एक अदृश्य सहारा मिला और वे मुश्किल समय से निकल पाए।
3. अज्जू के पिता ने इसलिए कहा होगा, क्योंकि वे अपनी बीमारी या किसी अन्य विवशता के कारण स्वयं पत्र लिखने में असमर्थ थे, या वे अपनी स्थिति को छुपाना चाहते थे। यह उनकी लाचारी या अपने परिवार के प्रति चिंता को दर्शाता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि समय बहुत तेजी से बीतता है और किसी के लिए नहीं रुकता है।
2. कभी-कभी जीवन की बड़ी मुश्किलों से निकलने के लिए छोटी-सी मदद या उम्मीद की किरण (तिनकों का साया) ही काफी होती है।
3. यदि किसी व्यक्ति ने मरने से पहले किए गए वादे या जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, जिससे उसे संतुष्टि मिली है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पत्र
2. चौंकाने
3. सो
4. खिलखिलाया
5. मर

- **सही-गलत**

  1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि अज्जू के परिवार को पिता की मृत्यु का पता चल जाता तो वह अनाथ हो जाता और उसकी माँ जीते-जी घुट-घुटकर मर चुकी होती। उसका परिवार बिखर जाता। अज्जू की पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती तथा उसके सपने उसके दिल में ही रह जाते। बेसहारा होकर कर्ज के बोझ से दब गया होता तथा गलत संगति में पड़ जाता। यहीं कहानी का अंत हो जाता।
2. वृद्ध व्यक्ति ने जो किया, वह सही किया तथा उसका यही दायित्व था, क्योंकि उसने अपने मित्र को मरते समय यह वचन दिया था। उसे निभाना चाहिए था। उस वृद्ध व्यक्ति का यही धर्म था।
3. हमारे विचार से वह वृद्ध व्यक्ति अज्जू का पालक पिता अथवा अभिभावक ही था।
4. यदि हम अज्जू के स्थान पर होते तो वृद्ध व्यक्ति को धन्यवाद देते तथा उनका अपने पिता की तरह मान-सम्मान भी करते।

- **भाषा आधारित**

1. **शब्दों के लिंग बदलिए–**
   (क) पुरुष, (ख) धोबिन, (ग) माता, (घ) वृद्धा, (ङ) बेटा, (च) युवती।
2. **मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग**
   (क) उदास हो जाना
   वाक्य प्रयोग– कक्षा में कम नम्बर आने पर अजय का चेहरा मुरझा गया।
   (ख) बहुत तेज गति से जाना
   वाक्य प्रयोग– बालक का मन पंख लगाकर उड़ रहा है।
   (ग) बहुत खुश हो जाना
   वाक्य प्रयोग– अपनी माँ को देखकर बच्चों का चेहरा खिल उठा।
   (घ) मदद करना
   वाक्य प्रयोग– राधिका अपनी माँ का हाथ बँटाती है।
   (ङ) भावुक होकर रुलाई आना
   वाक्य प्रयोग– सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे कहते-कहते उनका गला भर आया।
3.

	उपसर्ग	मूलशब्द
(क)	अ	बोध
(ख)	अ	प्रवासी
(ग)	अ	दृश्य
(घ)	वि	लीन

4. **प्रत्यय छाँटिए–**
   (क) ईय (ख) इत (ग) ता (घ) ई (ङ) इक (च) ई

- **क्रियाकलाप आधारित**

  छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

5. पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कवि बहुत दिनों से थोड़ी धरती पाने की सोच रहा था।
2. बाग-बगीचा लगाने के लिए।
3. बाग-बगीचा।
4. पक्षी।
5. आज सभ्यता वहशी बन गई है।

- **लिखित**

1. उपवन फूलों और फलों से लदे हुए हैं।
2. कवि मनुष्यों से यह विनती कर रहा है कि वह पेड़ों को न काटें क्योंकि वे पक्षियों का आवास हैं।
3. शाखाएँ कटने पर पेड़ भोले शिशुओं जैसा रोते हैं।

4. सभ्यता इंसानों को जहर बाँट रही है।
5. हमें पेड़-पौधों का संरक्षण करना चाहिए। मानव-जीवन इन्हीं पर आश्रित है। यदि जंगल नहीं रहेंगे तो जीवन संकट में पड़ जाएगा।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ व प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' के 'पेड़ों के संग बढ़ना सीखो' शीर्षक से ली गई हैं, जिसके लेखक सर्वेश्वर दयाल 'सक्सेना' हैं। इनके माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।

व्याख्या : कवि कहता है कि बच्चे और पेड़-पौधे दोनों ही इस दुनिया को हरा-भरा बनाते हैं। किन्तु मानव यह नहीं समझता कि वह जिस सुख-सुविधा का उपयोग कर रहा है, उसका आधार पेड़ ही हैं। लोग इस बात को नहीं समझते हैं और विकास के नाम पर लगातार पेड़ों को काटते हैं।

इसके परिणामस्वरूप जहरीली हवा फैल रही है, जो हमारे फेफड़ों में पहुँचकर स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रही है।

कवि लोगों को इस प्रकार सचेत कर रहा है कि यदि उसने प्रकृति का सम्मान नहीं किया तो उसका जीवन संकट में पड़ जाएगा।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 4. (ग)
2. (घ) 5. (क)
3. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. सभ्यता के वहशी बनने से कवि का तात्पर्य है कि समाज में रहकर व्यक्ति समाज के लिए ही अभिशाप बन रहा है।
2. कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि पेड़-पौधे ही मानव समाज का आधार हैं। वे हमें जीवन प्रदान करते हैं और हमारे वातावरण को हरा-भरा व जीवंत बनाते हैं। हमें पर्यावरण के संरक्षण में सहयोग करना चाहिए। पेड़ लगाने चाहिए और इन्हें कटने से बचाना चाहिए। अगर पेड़ नहीं रहेंगे तो प्राणी समाज खतरे में पड़ जाएगा।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि हमें पेड़ों का संरक्षण करते हुए उनके साथ-साथ समाज में आगे बढ़ना चाहिए। पेड़ जिस तरह वातावरण को हरा-भरा रखते हैं। उसी तरह हमको भी समाज के लिए कुछ अच्छे कार्य करने चाहिए।
2. इस पंक्ति का आशय है कि मानव समाज आज स्वार्थभाव से प्रेरित हो चुका है। वह विकास के नाम पर पेड़-पौधों को क्षति पहुँचा रहा है। वह स्वार्थ के अंधेपन में अपने संरक्षक का ही शोषण कर रहा है।
3. इस पंक्ति का आशय है कि कवि अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है कि काश! उसके पास कुछ ऐसी जमीन होती जो परती पड़ी होती अर्थात् जिसमें फसल न होती हो, उसमें कवि पेड़-पौधे लगाता।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. <u>बच्चे</u> और <u>पेड़</u> दुनिया को <u>हरा-भरा</u> रखते हैं।

   नहीं समझते जो, वे <u>दुष्कर्मों</u> का <u>फल</u> चखते हैं।

   आज <u>सभ्यता</u> वहशी बन, <u>पेड़ों</u> को काट रही है,

   <u>जहर</u> फ़ेफड़ों में भरकर <u>सब</u> को बाँट रही है।

- **सही-गलत**

1. (✕), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✕), 5. (✓)।

- **सुमेलन**

1. (ग), 2. (घ), 3. (ङ), 4. (ख), 5. (क)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मनुष्य प्रकृति के साथ अनेक दुष्कर्म कर रहा है। वह पेड़-पौधों को काटता जा रहा है तथा रासायनिक पदार्थों को बढ़ावा दे रहा है। वायु को धुएँ से प्रदूषित करता जा रहा है तथा पहाड़ों को खोदकर संतुलन बिगाड़ रहा है। प्रकृति से अधिक पाने की लालसा में वह भूल गया है कि पर्यावरण का संकट मंडराता जा रहा है।
2. छात्र स्वयं करें।

- **भाषा आधारित**

1. कविता में आए सा/सी वाले उदाहरण–
   छोटी-सी खेती हो, फूल-फलों से लदे बगीचे, छोटी-सी क्यारी हो।
2. (क) धरती – भू, धरा।

(ख) बाग – बगीचा, उपवन।
(ग) फूल – पुष्प, सुमन।
(घ) जलाशय – तड़ाग, तालाब।
(ङ) पक्षी – खग, विहग।
(च) पेड़ – तरु, वृक्ष।

3. (क) थोड़ा – ज़्यादा।
(ख) खुशबू – बदबू।
(ग) ताजी – बासी।
(घ) शांत – अशांत।
(ङ) खोना - पाना।
(च) दुष्कर्म – सत्कर्म।

4. (क) धरती – पृथ्वी – ये धरती सबको जीवन देती है।
(ख) खुशबू – सुगंध – फूलों की खुशबू सबको भाती है।
(ग) उपवन – बगीचा – हमारे विद्यालय में एक उपवन है।
(घ) दुनिया - संसार – पूरी दुनिया को पेड़ों की जरूरत है।
(ङ) जहर – विष – प्रदूषण हवा में जहर घोल रहा है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

3. प्रिय भाई
सप्रेम नमस्ते।
हम यहाँ सकुशल हैं। आज मैं तुम्हें पर्यावरण प्रदूषण के बारे में बताना चाहता हूँ। प्रदूषण से हवा, पानी, मिट्टी सब दूषित हो रहे हैं; जिससे बीमारियाँ बढ़ रही हैं। अतः इससे छुटकारा पाने के लिए अधिक-से-अधिक पेड़ लगाने चाहिए और पर्यावरण सुरक्षा को अपनाना चाहिए। आशा है तुम इन बातों का ध्यान रखोगे।
तुम्हारा भाई
XYZ

4. **वृक्ष हमारे साथी**
वृक्ष हमारे सच्चे साथी हैं। वे हमें ऑक्सीजन, फल, फूल व छाया देते हैं। पक्षियों और जानवरों को आश्रय देते हैं। बिना किसी स्वार्थ के मानव की रक्षा करते हैं। इसलिए हमें इन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए, बल्कि इनका संरक्षण करना चाहिए। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो प्राणी जगत संकट में पड़ जाएगा।

5. छात्र स्वयं करें।

6. सुभागी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** विधवा, उजड्ड, गृहस्थी, जलसा, इकट्ठा, तारीफ, चारपाई, जरूरत, भाग्यशाली

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. सुभागी दो भाई-बहन थे।
2. सुभागी बड़ी ही चतुर होने के कारण तुलसी महतो अपनी बेटी को बहुत प्यार करते थे।
3. गाँव वालों को तुलसी महतो ने पंचायत कराने के लिए इकट्ठा किया।
4. तुलसी के मरने के पन्द्रहवे दिन के बाद सुभागी की माँ मर गई।
5. सजनसिंह ने सुभागी के सामने अपनी बहू बनाने का प्रस्ताव रखा।

- **लिखित**

1. तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई। रामू के जन्म पर उन्होंने रुपये कर्ज लेकर जलसा किया था और सुभागी पैदा हुई, तो घर पर रुपये होते हुए एक कौड़ी तक खर्च न की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न आज कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय। जो हमारी सब प्रकार सहायता करती है।
2. सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी ही समझा है, कि जब तक जिऊँगा, ऐसा ही समझता रहूँगा। तुम निश्चिंत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।
3. सुभागी की माँ ने अंतिम समय में सुभागी को आशीर्वाद दिया, "तुम्हारे जैसी बेटी

पाकर मैं तर गई। मेरा क्रिया-कर्म तुम्हीं करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो"।

4. जिस दिन सुभागी ने आखिरी किस्त चुकाई, उस दिन उसकी खुशी का ठिकाना ना था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो चुका था।
5. "दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।" मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ कहेंगे, मेरे भले के लिए ही कहेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 4. (ख)
2. (ग) 5. (ग)
3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. "अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो" क्योंकि यदि हमारी संतान सद्बुद्धि की होगी तो हमारा जीवन सार्थक बन जाता है।
2. दादा इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी। सुभागी ने इसलिए कहा कि मैं आपकी छत्रछाया पाकर धन्य हो जाऊँगी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. सुभागी ने कहा, "दादा अभी थकी नहीं हूँ। मुझे भी बहुत कार्य करना है। क्या आपने पूरा हिसाब लगा लिया? कुल इस कार्यक्रम में कितना रुपया खर्च हुआ?

2. जिसे हम रत्न या घर का 'चिराग' समझते हैं, वह पुत्र कितना कठोर है, तथा जिसे हम अपनी किस्मत का दंड कहते हैं। वह मंगलकारी निकलती है।

3. सुभागी की माँ ने कहा, "तुम्हारी जैसी बेटी पाकर मैं धन्य हो गई हूँ। मेरा क्रिया-कर्म या दाह संस्कार तुम्हारे ही हाथों से होना चाहिए।"

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पंद्रहवे 2. तीन 3. विधवा
4. मेरा 5. भाग्यशाली

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **क्रम संयोजन**

1. → (7), 2. → (5), 3. → (6), 4. → (4), 5. → (3), 6. → (2), 7. → (1)

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि तुलसी का पुनः विवाह कर देते तो माता-पिता का 'नरक' बन जाता, वह चैन की साँस भी नहीं ले पाते।
2. यदि रामू के दबाव में आकर उसके माता-पिता सुभागी को घर में अलग कर देते तो उसके माता-पिता जीते-जी मर जाते और रामू उन्हें खाना भी न देता।
3. सुभागी ने पिता के मृत्युभोज में पूरे गाँव को भोजन कराया। हमारे विचार में 13 ब्राह्मण या कन्या को भोजन कराना ही उचित है लेकिन इस प्रकार मृत्युभोज में अधिक खर्चा करना फिजूल ही है।

- **भाषा आधारित**

1. **मुहावरों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग**

(क) तन मन धन लगाना

वाक्य प्रयोग–रामू ने अपने पिता की जी-जान लगाकर सेवा की।

(ख) त्याग करना

वाक्य प्रयोग– भगत सिंह ने देश सेवा में अपना शरीर न्योछावर कर दिया।

(ग) आश्चर्यचकित होना

वाक्य प्रयोग– राधा ने जब अपनी बहन का वैभव देखा, तो उसने दाँतों तले उँगली दबा ली।

(घ) पीछे पड़कर रह जाना

वाक्य प्रयोग– एक गरीब को मैंने सहायता क्या दी? वह तो मेरे गले का हार बन कर रह गयी।

2. तद्भव शब्दों को तत्सम शब्द में लिखिए–

(क) नेत्र (ख) वृद्धावस्था

(ग) मुख (घ) पैर

3. वाक्यों में क्रिया विशेषण को रेखांकित कीजिए–
   (क) दिन-प्रतिदिन
   (ख) धीरे-धीरे, पकड़ ली
   (ग) मेहनत (घ) जोर से
4. गद्यांश में उचित विराम-चिह्न लगाइए–
   सजन–"तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं बेटी! तुम साक्षात भगवती का अवतार हो।"
   सुभागी– "मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए करेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?
   सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा, "बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?"

क्रियाकलाप-आधारित

1–4. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

5. 1. **द्रोपदी मुर्मू–** वह एक भारतीय राजनी. तिज्ञ हैं। आप भारत की 15वीं और वर्तमान राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत हैं। वह इस पद को सँभालने वाली पहली आदिवासी महिला और दूसरी महिला हैं। राष्ट्रपति बनने से पहले झारखंड के नौवे राज्यपाल का पद सँभाला।

2. **बछेन्द्री पाल–** यह एक भारतीय पर्वतारोही हैं। 1984 में माउंट एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला थीं। 2019 में पदम भूषण से भी सम्मानित किया गया।

3. **सावित्री बाई फूले–** यह एक मराठी महिला हैं। इन्होंने महिलाओं और दलितों के लिए 18 से अधिक स्कूल खोले, तथा विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया।

4. **सुनीता विलियम्स–** वह एक अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री और नौ सेना अधिकारी हैं। इनका जन्म ओहियो में हुआ था। उनके पिता भारतीय मूल के हैं। वह अमेरिकी नौसेना की सेवानिवृत्त कैप्टन और नासा की पूर्व अंतरिक्ष यात्री हैं। इन्होंने 27 साल तक कार्यरत रहने के बाद रिटायरमेंट ली है।

7. शस्त्र-त्याग

अभ्यास

उच्चारण आधारित

शुद्ध लिखो और बोलो– प्रात:काल, शिविर, गुप्तचर, आत्मसमर्पण, उत्साहपूर्वक, वीरांगना

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अशोक मगध के सम्राट थे।
2. सम्राट अशोक की सैनिक छावनी मैदान में बनी थी क्योंकि सैनिकों को खुला वातावरण मिले।
3. कलिंग के महाराज की मृत्यु के पश्चात् अशोक के साथ युद्ध लड़ने के लिए कलिंग महाराज की पुत्री पद्मा स्त्री सेना के साथ आयी।
4. सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध में हुए भीषण नरसंहार और विनाश को देखकर शस्त्र त्याग का निश्चय किया।
5. सम्राट अशोक ने शस्त्र त्याग करके बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

- **लिखित**

1. वंशीधर श्रीवास्तव द्वारा रचित एकांकी 'अशोक का शस्त्र त्याग' सबसे प्रभावशाली पात्र कलिंग की राजकुमारी पद्मा है। वह अपनी वीर कन्याओं की सेना के साथ निडर होकर सम्राट अशोक को चुनौती देती है और युद्ध के बदले युद्ध करने की बात करती है।
   पद्मा के सबसे प्रभावशाली होने के तर्क–
   (1) **निडरता और साहस–** अशोक जैसे विशाल सेनापति के सामने जिसके आगे पूरी दुनिया नतमस्तक थी, पद्मा का निडर होकर खड़ा होना उसके असीम साहस को दर्शाता है।

(2) **नारी शक्ति का प्रतीक–** वह केवल राजा की पुत्री नहीं, बल्कि युद्ध के मैदान में स्त्रियों की सेना का नेतृत्व करने वाली एक सच्ची वीरांगना के रूप में सामने आती है।

(3) **प्रेरक संवाद–** वह अपनी वीरांगनाओं में वीरता का संचार करती है और उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रेरित करती है।

(4) **हृदय परिवर्तन का कारण–** पद्मा का निडर और न्यायप्रिय आचरण ही अशोक के हृदय पश्चाताप और अहिंसा के भाव जगाने का कारण बनता है।

निष्कर्ष– पद्मा केवल प्रतिशोध की भावना नहीं रखती थी बल्कि वह न्याय और मानवता का प्रतीक बनकर उभरती है। उसकी निडरता और वीरता ने ही विजेता सम्राट को हृदय परिवर्तन के लिए प्रेरित किया, इसलिए वही सबसे अधिक प्रभावशाली पात्र है।

2. वंशीधर श्रीवास्तव द्वारा रचित एकांकी 'अशोक का शस्त्र-त्याग' में पद्मा (मगध की राजकुमारी और कलिंग की बेटी) एक अत्यंत सशक्त, साहसी और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत नारी पात्र है। वह केवल एक राजकुमारी नहीं, बल्कि कलिंग की महिलाओं की सेना का नेतृत्व करने वाली वीरांगना है। 'अशोक का शस्त्र-त्याग' में पद्मा के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **राष्ट्रप्रेमी और वीरांगना–** पद्मा कलिंग की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार है। वह कहती है- "जब तक कलिंग के दुर्ग में एक भी नारी जीवित है, तब तक अशोक की सेना को आगे नहीं बढ़ने दिया जाएगा।

(2) **साहसी और निर्भीक–** मगध के विशाल सम्राट अशोक के सामने अकेले निहत्थे खड़े होकर उसे युद्ध के लिए ललकारना उसके साहस को दर्शाता है। वह अशोक से कहती है, "मैंने तलवार न चलाने की प्रतिज्ञा की है, मैं निहत्थे पर वार नहीं करती।"

(3) **सच्ची क्षत्राणी और धर्मपरायण–** पद्मा को युद्ध से कोई प्रेम नहीं है, लेकिन वह कलिंग के सम्मान के लिए लड़ने को तत्पर है। जब अशोक युद्ध का परित्याग कर देते हैं, तो वह उन्हें क्षमा कर देती है, जो उसकी उदारता और धर्मपरायणता को दर्शाता है।

(4) **सत्य और अहिंसा की उपासक–** अन्त में पद्मा अशोक को अहिंसा और सत्य का मार्ग दिखाती है। वह साबित करती है कि तलवार से बड़ा शस्त्र 'सत्य' और 'प्रेम' है।

संक्षेप में पद्मा वीरता, स्वाभिमान और नैतिकता की प्रतिमूर्ति है, जिसके साहस के कारण सम्राट अशोक को युद्ध का परित्याग करना पड़ा।

3. जब सम्राट अशोक ने राजकुमारी पद्मा को सैनिक वेश में अपनी विशाल सेना के साथ युद्धभूमि में देखा तो उनके मन में कई गहन विचार और क्रान्तिकारी परिवर्तन आए।

(1) **स्त्री-शक्ति का आश्चर्य –** अशोक स्त्री को सैनिक के रूप में देखकर आश्चर्यचकित रह गए। जब पद्मा ने उन्हें चुनौती दी, तो अशोक ने सोचा कि वे एक स्त्री पर तलवार नहीं उठा सकते।

(2) **युद्ध की निरर्थकता का बोध–** पद्मा के साहस और दृढ़ता को देखकर अशोक को अहसास हुआ कि कलिंग का युद्ध वास्तव में कितना भयानक और निरर्थक था, जहाँ केवल निर्दोष लोग मारे गये।

(3) **अपराधबोध और ग्लानि–** उनके मन में अपने द्वारा किए गए नरसंहार (कलिंग का युद्ध) को लेकर गहरा पश्चाताप (ग्लानि) और अपराधबोध जागा।

(4) **हृदय परिवर्तन (शस्त्र-त्याग)–** उन्हें लगा कि सच्ची विजय हथियारों से नहीं, बल्कि प्रेम और करुणा से होती है। इस आत्मज्ञान के बाद ही उन्होंने अपना शस्त्र (तलवार) फेंक दिया और हमेशा के लिए युद्ध का त्याग करने का निश्चय किया। अंततः पद्मा ने अशोक को जीवित छोड़ दिया, क्योंकि वह अब निहत्थे और पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे, जिससे अशोक को एक नया जीवन और अहिंसा का मार्ग मिला।

4. राजकुमारी पद्मा के ललकारने पर भी सम्राट अशोक युद्ध के लिए इसलिए तैयार नहीं हुए क्योंकि कलिंग युद्ध के विनाशकारी नरसंहार को देखकर उनका हृदय परिवर्तन हो चुका था। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

   (1) **हृदय परिवर्तन–** कलिंग युद्ध में लाखों लोगों की मृत्यु और रक्तपात को देखकर अशोक को ग्लानि हुई और उन्होंने हिंसा का मार्ग छोड़ दिया।

   (2) **स्त्री पर शस्त्र न उठाने का संकल्प–** पद्मा ने जब उन्हें युद्ध के लिए ललकारा तो अशोक ने कहा कि वे क्षत्रिय धर्म के अनुसार स्त्रियों पर हथियार नहीं उठा सकते।

   (3) **सत्य और अहिंसा का मार्ग–** अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाकर अहिंसा को अपना लिया था और प्रण लिया था कि अब वे कभी युद्ध नहीं करेंगे।

   (4) **पद्मा की निहत्थे पर वार न करने की नीति–** पद्मा ने निहत्थे अशोक पर वार करना स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह एक क्षत्राणी थी और निहत्थे पर वार करना क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध था।

   इस प्रकार अशोक का शस्त्र-त्याग उनके प्रतिशोध के बदले करुणा और क्षमा के मार्ग को अपनाने का प्रतीक बन गया।

5. मगध की विशाल सेना के पास कलिंग पर विजय प्राप्त करने की सभी अनुकूल परिस्थितियाँ होने के बावजूद, वह चार वर्षों तक कलिंग पर आधिपत्य स्थापित करने में असफल रही। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे–

   (1) **कलिंग के दुर्ग का फाटक बंद होना–** कलिंग के महाराज युद्ध में मारे गए थे, लेकिन कलिंग दुर्ग के फाटक अभी भी बंद थे। जब तक किला सुरक्षित था, मगध की सेना का पूर्ण अधिकार नहीं माना जा सकता था।

   (2) **कलिंग के निवासियों का दृढ़ निश्चय–** कलिंग की जनता और विशेषकर महिलाओं में अपने राज्य की रक्षा के लिए गजब का साहस और त्याग की भावना थी। वे अन्तिम सांस तक लड़ने को तैयार थीं, जिससे मधग की सेना असमंजस में थी।

   (3) **राजकुमारी पद्मा का नेतृत्व–** कलिंग के राजा की मृत्यु के बाद उनकी पुत्री राजकुमारी पद्मा ने महिलाओं की एक विशाल सेना का नेतृत्व किया। पद्मा ने महिलाओं को "वीरता और साहस" का प्रण दिलाया, जिससे कलिंग की रक्षा पंक्ति अभेद्य हो गई।

   (4) **आन्तरिक प्रतिशोध की भावना–** कलिंग की नारियाँ अपने पति, पिता और पुत्रों की हत्या का बदला लेने के लिए प्रतिशोध की भावना से भरी थीं, जो मगध की सेना के लिए एक नई चुनौती थी।

   संक्षेप में, मगध की सैनिक शक्ति के आगे कलिंग का आत्मबल और संकल्प ज्यादा मजबूत साबित हुआ।

● **प्रत्यास्मरण**

1. सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवार फेंक देते हैं।
2. अशोक सम्राट राजकुमारी पद्मा के सामने सिर झुकाते हैं क्योंकि वे कलिंग युद्ध में हुए भीषण जनसंहार के कारण पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे।
3. राजकुमारी पद्मा सम्राट अशोक से अपने पिता और कलिंग की जनता की मौत का प्रतिशोध (बदला) लेना चाहती थी।
4. सम्राट अशोक राजकुमारी पद्मा को यह वचन देते हैं कि वे भविष्य में कभी शस्त्र नहीं उठाएँगे और अब से अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे।

● **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (ख)
2. (घ) 5. (ग)
3. (ख)

● **सोच-समझकर**

कलिंग युद्ध से पूर्व और पश्चात् अशोक के चरित्र और व्यक्तित्व में जमीन-आसमान का अंतर आता है।

1. **कलिंग युद्ध से पूर्व (अशोक का चरित्र)** – कलिंग युद्ध के समय तक अशोक एक महत्वाकांक्षी, आक्रामक और साम्राज्यवादी शासक थे।

(1) **साम्राज्यवादी नीति–** युद्ध से पूर्व अशोक एक महत्वाकांक्षी शासक के रूप में दिखाए गए हैं, जो पूरे भारतवर्ष को मौर्य साम्राज्य के अधीन करना चाहते थे।

(2) **कलिंग के प्रति जिद–** कलिंग ही एकमात्र ऐसा राज्य था जो मगध के अधीन नहीं था। अशोक ने इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया और कलिंग को हर हाल में जीतने का निश्चय किया।

(3) **अहंकारी शासक–** वे अपनी सेना की शक्ति पर असीम विश्वास रखते थे और कलिंग की बची हुई सेना या राजकुमारी पद्मा के प्रतिशोध को तुच्छ समझते थे।

(4) **रक्तपात के प्रति संवेदनशील–** कलिंग युद्ध के दौरान हुए नरसंहार से उन्हें कोई पश्चात नहीं था, उनका एकमात्र लक्ष्य विजय थी।

(5) **विजय की ललक–** कलिंग पर चार साल तक चले युद्ध के बाद भी जब तक कलिंग का दुर्ग नहीं जीता गया, अशोक में भारी अधीरता और खिन्नता थी। वे हर हाल में कलिंग को अपने साम्राज्य में मिलाना चाहते थे।

(6) **दृढ़ प्रतिज्ञ–** जब उन्हें पता चला कि दुर्ग के फाटक बंद हैं, तो वे स्वयं युद्ध के मैदान में उतरने के लिए तत्पर हो गए।

कलिंग युद्ध के पश्चात् (अशोक का चरित्र)– युद्ध के अन्तिम दृश्य में जब कलिंग की राजकुमारी अपनी स्त्री सेना को लेकर सामने आती है और अशोक को निहत्थे (शस्त्रहीन) होकर युद्ध करने की चुनौती देती है, तब अशोक का हृदय परिवर्तन होता है।

(1) **करुणा और पश्चाताप–** जब पद्मा उन्हें युद्ध में मारे गए लाखों निर्दोष लोगों की याद दिलाती है, तो अशोक को अपनी भूल का अहसास होता है। वे हिंसा की निरर्थकता को समझते हैं।

(2) **शस्त्र-त्याग–** वे अपना तलवार (शस्त्र) जमीन पर फेंक देते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि वे भविष्य में कभी शस्त्र नहीं उठाएँगे।

(3) **मानवतावादी दृष्टकोण–** अब वे एक क्रूर विजेता से एक दयालु और अहिंसक शासक बन जाते हैं। वे विजय की जगह धर्म-विजय (प्रेम और अहिंसा की जीत) को अपनाते हैं।

(4) **बौद्ध धर्म के अनुयायी–** वे हिंसा का मार्ग छोड़कर शान्ति और करुणा के रास्ते पर चलते हैं और प्रजा के कल्याण को सर्वोच्च मानते हैं।

निष्कर्ष– वंसीधर का एकांकी दिखाता है कि कैसे कलिंग युद्ध के भीषण रक्तपात ने एक अहंकारी विजेता (अशोक) को एक महान दयालु और अहिंसक सम्राट में बदल दिया।

2. कलिंग युद्ध के उपरान्त सम्राट अशोक के हृदय में परिवर्तन और उनके द्वारा अहिंसा को अपनाने की कहानी है। इस एकांकी का केन्द्रीय भाव कलिंग युद्ध की विभीषिका और उसके बाद अशोक की मानसिक स्थिति पर आधारित है।

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" (गुलामी में सपने में भी सुख नहीं मिलता)- यह उक्ति इस एकांकी में पराधीनता (कलिंग की पराधीनता) के भाव से ज्यादा, अशोक की अपनी आत्मिक पराधीनता के संदर्भ में सटीक बैठती है। जिसे कलिंग की राज. कुमारी पद्मा ने उजागर किया।

'अशोक का शस्त्र-त्याग' और 'कलिंग युद्ध' के साथ भाव-साम्य (विचार)

(1) **अशोक का अहंकार और युद्ध–** अशोक मगध के सम्राट के रूप में शक्तिशाली थे और कलिंग को अपने राज्य में मिलाने के लिए चार साल से युद्ध कर रहे थे। इस समय वे हिंसात्मक दिग्विजय के पराधीन थे।

(2) **विजय के बाद का असुख–** जब कलिंग के महाराज युद्ध में मारे गए तब भी कलिंग का दुर्ग बंद था। जब अशोक ने विजय प्राप्त की, तो उन्हें बाहर से तो वह स्वतंत्र (विजेता) लग रहे थे, लेकिन अंदर से वे हिंसा और रक्तपात के गुलाम बन चुके थे।

पदमा की भूमिका– कलिंग की राजकुमारी पद्मा ने जब अशोक के सामने अपनी सेना (स्त्रियों की सेना) की तब उसने कहा कि हम तब तक नहीं झुकेंगे जब तक पराधीन नहीं हैं। यह उक्ति अशोक को आईना दिखाती है कि विजय पाकर भी वह मानसिक रूप से अशान्त थे।

(3) **शस्त्र का त्याग (सच्ची स्वतंत्रता)**– जब अशोक को अपनी भूल का अहसास हुआ (हृदय परिवर्तन) उन्होंने अपने शस्त्र त्याग दिए। यह उनके लिए पराधीनता से मुक्ति थी। अब वे अहिंसा के गुलाम नहीं बल्कि शान्ति के उपासक (बौद्ध धर्म) बन गए।

निष्कर्ष– बंशीधर श्रीवास्तव के इस एकांकी के माध्यम से यह विचार सामने आता है कि "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" का अर्थ केवल भौतिक गुलामी नहीं है। जब तक मनुष्य क्रोध, हिंसा और अहंकार के वश में है, तब तक उसे सच्चे सुख की अनुभूति नहीं हो सकती। भले ही वह कलिंग जैसा बड़ा राज्य जीत ले। शस्त्रत्याग कर अशोक ने आन्तरिक स्वतंत्रता प्राप्त की।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **भाव-चर्चा/भावार्थ:**

(1) फाटक की ओर देखना (विस्मय और निरूत्तर होना)– जब कलिंग की नारियों की सेना पद्मा के नेतृत्व में दुर्ग के फाटक से बाहर निकलती है, तो अशोक और उनकी सेना चकित होकर रह जाती है। सम्राट अशोक जो अब तक युद्ध के नशे में थे, अचानक निरूत्तर हो जाते हैं। यह दृश्य उनके अहंकार को तोड़ देता है कि उन्होंने पूरी तरह विजय प्राप्त कर ली है।

● **तलवार का खींची की खींची रह जाना (हिंसा की निरर्थकता)**– जब उन्हें पता चलता है कि यह शस्त्र सज्जित सेना नारियों की है, तो उनकी तलवारें खींची की खींची रह जाती हैं, यह भाव दर्शाता है कि युद्ध आत्मसम्मान के आगे निस्तेज हो जाता है। अशोक को अहसास होता है कि उन्होंने जिन लोगों को मारा, वे किसी के पति, पिता या भाई थे।

● **दृश्यों का मौन :** सेना के हाथ में तलवारें तो हैं, लेकिन अब उनका उद्देश्य खत्म हो चुका है। वे स्तब्ध होकर उस फाटक की ओर देखते हैं, जहाँ से बदला लेने के लिए वीरांगनाएँ आई थीं, लेकिन अब वहाँ सिर्फ शान्ति और शस्त्र-त्याग का दृश्य है।

निष्कर्ष– अशोक के इस कदम ने सिद्ध किया कि सच्चा शस्त्र हिंसा नहीं, बल्कि अहिंसा और करुणा है।

2. सम्राट अशोक की विजय लालसा (अंधाधुंध विस्तार नीति) और उसके भयंकर परिण ाामों का मार्मिक चित्रण किया गया है। यह पंक्ति कलिंग युद्ध के बाद अशोक के हृदय परिवर्तन का मूल कारण बनती है।

इस भाव की चर्चा और स्पष्टीकरण नीचे दिया गया है–

(1) **विजय लालसा**– (i) अशोक मगध का सम्राट था और उसकी महत्वकांक्षा पूरे जम्बूद्वीप पर अपना शासन स्थापित करने की थी।

(ii) कलिंग राज्य स्वतंत्र था और अशोक उसे जीतकर मगध साम्राज्य में मिलाना चाहता था, जो उसकी विजय की भूख को दर्शाता है। इस लालसा में उसने न्याय-अन्याय का विचार नहीं किया।

(2) **लाखों माताओं की गोद सूनी होना**– (i) कलिंग युद्ध अत्यंत विनाशकारी था। इसमें डेढ़ लाख लोग बंदी बनाए गए, एक लाख से अधिक लोग मारे और अनेक घायल हुए।

(ii) जब युद्ध के बाद अशोक रणभूमि में घूमता है, तो उसे हर तरफ लाशें, रोती-बिलखती महिलाएँ और अनाथ बच्चे दिखाई देते हैं। यह दृश्य बताता है कि उसकी "विजय" की कीमत क्या थी– लाखों माताओं के बेटे, पत्नियों के पति, और बच्चों के पिता मारे गए।

(3) **कलिंग की राजकुमारी पद्मा का आक्षेप**–(i) जब कलिंग की राजकुमारी पद्मा, अशोक के सामने शस्त्र उठाने के लिए आती है तो वह अशोक को उस विनाश की याद दिलाती है।

(ii) पद्मा के माध्यम से ही अशोक को यह असाहस होता है कि उसने 'विजय' के नाम पर निर्दोषों की हत्या की है।

(4) **आत्मग्लानि और हृदय परिवर्तन–**
(i) विजय होकर भी अशोक को "हार" का अहसास होता है। वह समझ जाता है कि तलवार से हासिल की गई विजय सच्ची विजय नहीं है।

(ii) लाखों के ढेर को देखकर अशोक का हृदय द्रवित हो जाता है और वह घोषणा करता है- "अशोक अब कभी युद्ध नहीं करेगा।"।

(iii) वह अपने शस्त्रों को फेंक देता है और बौद्ध भिक्षु की शरण में जाकर अहिंसा और करूणा का मार्ग अपनाता है, इस प्रकार "चंडाशोक" से "धर्माशोक" बनता है।

निष्कर्ष– 'अशोक का शस्त्र-त्याग' में यह पंक्तियाँ दिखाती हैं कि कैसे एक राजा की सत्ता का नशा मानवता को कुचल देता है। अंततः अशोक को यह समझ में आता है कि सच्ची विजय तलवार से नहीं, बल्कि लोगों का दिल जीतकर की जाती है।

3. **सम्राट अशोक द्वारा बोला गया यह कथन –** "मैं अब शस्त्र नही उठाऊँगा, यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है।" उसके जीवन के सबसे बड़े हृदय परिवर्तन का परिचायक है। यह पंक्ति न केवल युद्ध की समाप्ति, बल्कि हिंसा के प्रति उनके घृणाभाव को स्पष्ट करती है।

भावार्थ और संदर्भ :

यह दृश्य कलिंग युद्ध के बाद का है, जहाँ चार साल के भीषण संघर्ष और लाखों निर्दोषों की मृत्यु देखने के बाद, अशोक कलिंग की राजकुमारी पद्मा के सामने निहत्थे खड़े हैं। जब पद्मा उन्हें युद्ध के लिए चुनौती देती है, तब अशोक को अपनी गलती का अहसास होता है।

आशय स्पष्टीकरण–

(1) **युद्ध से विरक्ति–**अवधी का शस्त्र न उठाने का अर्थ है कि अब वे भविष्य में किसी भी स्थिति में अपनी तलवार (शस्त्र) का प्रयोग नहीं करेंगे। उन्होंने हिंसा का मार्ग छोड़ दिया।

(2) **अटल प्रतिज्ञा–**यह केवल शब्द नहीं, बल्कि एक संकल्प है। अब अशोक का मार्ग अहिंसा है।

(3) **पश्चाताप–**कलिंग युद्ध में हुए जन. संहार ने उन्हें अंदर से तोड़ दिया था, और यह कथन उस अपराधबोध को दर्शाता है।

(4) **हृदय परिवर्तन–** यह कथन साबित करता है कि एक क्रूर विजेता अब एक दयालु और शान्तिप्रिय शासक बन गया है, जो अब बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को अपना रहा है।

निष्कर्ष– यह एकांकी इस बात पर जोर देता है कि सच्ची वीरता तलवार चलाने में नहीं, बल्कि उसे त्यागने (शस्त्र-त्याग) में है। यह अहंकार पर करुणा की जीत है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. सदावर्त
2. तलवारें
3. अशोक
4. फाटक
5. दूत

- **सत्य-असत्य**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓), 6. (✓), 7. (✗)।

- **क्रम संयोजन**

1. वाक्य– 2
2. वाक्य– 7
3. वाक्य– 1
4. वाक्य– 3
5. वाक्य– 6
6. वाक्य– 5
7. वाक्य– 4

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन एक अत्यंत मार्मिक और नाटकीय घटना है। मेरे विचार से, अशोक द्वारा शस्त्र-त्याग कर बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पीछे निम्नलिखित प्रमुख कारण थे–

(1) **कलिंग युद्ध का भीषण नरसंहार–** चार वर्षों तक चले कलिंग युद्ध में हुई तबाही को देखकर अशोक का मन ग्लानि और पश्चाताप से भर गया था। युद्धक्षेत्र में बिछी एक लाख से अधिक लाशें, घायल सैनिक और रोते-बिलखते परिवार ने उन्हें झकझोर कर रख दिया था।

(2) **राजकुमारी पद्मा की चुनौती–** युद्ध के अन्त में जब कलिंग की राजकुमारी पद्मा ने अपनी वीरांगना सेना के साथ अशोक को चुनौती दी, तो अशोक ने स्त्रियों पर शस्त्र उठाने से मना कर दिया। पद्मा ने उन्हें उनके द्वारा हुए नरसंहार का आईना

दिखाया, जिससे अशोक का अहंकार टूट गया और उन्हें आत्मग्लानि हुई।

(3) **सत्य और शान्ति का साक्षात्कार–** अशोक को यह आभास हुआ कि तलवार के बल पर जीती हुई विजय अस्थाई होती है और सच्ची विजय तो लोगों के हृदय को जीतने में है। उन्होंने अहिंसा के महत्व को समझा।

(4) **बौद्ध धर्म के उपदेश–** युद्ध की हिंसा से दुखी होकर अशोक को शान्ति और करुणा की आवश्यकता महसूस हुई, जो उन्हें भगवान बुद्ध के उपदेशों और बौद्ध धर्म में मिली।

संक्षेप में, अशोक का शस्त्र त्याग दिखाता है कि कैसे एक क्रूर शासक का हृदय, युद्ध की विभीषिका और एक निडर स्त्री (पद्मा) के शब्दों के प्रभाव में, अहिंसा और दया की राह पर चल पड़ा।

2. कलिंग युद्ध के बाद मानव जाति को जो भयंकर हानियाँ उठानी पड़ीं, उनका सजीव चित्रण किया गया है। जिसने अशोक का हृदय परिवर्तन कर दिया। एकांकी के अनुसार युद्ध के बाद निम्नलिखित हानियाँ/परिणाम सामने आए–

(1) **भारी जनहानि (लाखों लोगों की मृत्यु)** – युद्ध में कलिंग के एक लाख से अधिक सैनिक और नागरिक मारे गए, जिससे भीषण नरसंहार हुआ।

(2) **स्त्री और बच्चों का अनाथ होना–** लाखों माताओं की गोद सूनी हो गईं, और लाखों स्त्रियों की माँग का सिंदूर उजड़ गया (पति मारे गए)।

(3) **मानवता का विनाश–** चारों तरफ लाशें बिखरी पड़ी थीं, और कलिंग की धरती रक्त से लाल हो गई थी।

(4) **कलिंग की दुर्गति–** समृद्ध कलिंग राज्य पूरी तरह तहस-नहस हो गया और उसकी नारियों को हथियार उठाकर युद्ध के लिए मैदान में उतरना पड़ा।

(5) **भारी बंदी (अमानवीय यातना)–** लगभग डेढ़ लाख लोगों को बंदी बनाकर ले जाया गया।

(6) **सम्राट की आत्मग्लानि (पश्चाताप)–** यह युद्ध अशोक के लिए विजय की खुशी न लाकर पश्चाताप और अपराधबोध लाया, जिससे उन्होंने जीवन भर हिंसा न करने का निर्णय लिया।

इन भयावह परिणामों को देखकर ही अशोक ने अंत में तलवार फेंक दी और कहा, "मैं अब युद्ध नहीं करूँगा, कभी युद्ध नहीं करूँगा"।

- **भाषा आधारित**

1.

	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(क)	नि+अपराधी	विसर्ग संधि
(ख)	पू+आहुति	दीर्घ स्वर संधि
(ग)	सदा+आवर्त	दीर्घ स्वर संधि
(घ)	आत्म+उत्सर्ग	गुण स्वर संधि

2.

	समास-विग्रह	समास का नाम
(क)	महान है जो राजा	कर्मधारय समास
(ख)	सेना का पति (स्वामी)	तत्पुरुष समास
(ग)	शस्त्र से सज्जित	तत्पुरुष समास
(घ)	युद्ध के लिए भूमि	तत्पुरुष समास
(ङ)	कलिंग का दुर्ग	तत्पुरुष समास
(च)	राजा की कुमारी (पुत्री)	तत्पुरुष समास
(छ)	बिना हथियार वाला	अव्ययीभाव समास
(ज)	हिंसा न करना	अव्ययी भाव समास

3. मुहावरे का अर्थ और वाक्य प्रयोग–

(क) युद्ध करना या डटकर मुकाबला करना।
वाक्य– भारतीय सैनिकों ने सीमा पर दुश्मनों से जमकर लोहा लिया।

(ख) ध्यान न देना या सच्चाई को अनदेखा करना (मृत्यु हो जाना भी एक अर्थ है।
वाक्य– मुसीबत को सामने देखकर हमें आँखें बंद नहीं करनी चाहिए।

(ग)विधवा होना।
वाक्य– युद्ध में न जाने कितनी स्त्रियों की माँग का सिंदूर पूंछ जाता है।

(घ) बदला लेना या कठोर दंड देना।
वाक्य– कलिंग के विनाश ने भी सम्राट अशोक के खून की प्यास नहीं बुझाई।

4. (क) प्रसन्नतापूर्वक मारे गए हैं? तो मगध की विजय हुई है, कलिंग जीत गया है।

(ख) सामने कलिंग दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।
(ग) उनकी तलवारें खिंची की खिचीं रह जाती हैं।
(घ) बहनों! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर पत्नी हो।
(ङ) ना-ना, मैं स्त्री-वध कदापि नहीं करूँगा।
(च) क्यों? सिर क्यों झुका लिया, सम्राट?

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यायक की सहायता से स्वयं करें।

8. राष्ट्रपति भवन में प्रवेश

अभ्यास

उच्चारण आधारित

शुद्ध लिखो और बोलो– वायसराय, श्रद्धांजलि, विस्मयकारी, राष्ट्रपति, कार्यकाल, शपथपत्र, रामास्वामी, नेपोलियन।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. इस पाठ के लेखक आर. वेंकटरमन (राधास्वामी वेंकटरमन) हैं।
2. निवर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह थे।
3. इसका पूर्व नाम 'वायसराय हाउस' था।
4. उनका कार्यकाल 25 जुलाई 1987 से 25 जुलाई 1992 तक था।
5. राष्ट्रपति बनने के बाद पहला कार्य निवर्तमान राष्ट्रपति (ज्ञानी जैल सिंह) को विदा करना था।

- **लिखित**

1. गांधी जी वायसराय लॉर्ड इरविन से मिलने पहुँचे थे। विंस्टन चर्चिल ने उन्हें 'अधनंगा फकीर' कहकर अपमानजनक टिप्पणी की थी।
2. यह टिप्पणी चर्चिल की साम्राज्यवादी नस्लभेदी और अहंकार पूर्ण मानसिकता को दर्शाती है। जो भारतीयों को हीन भावना से देखते थे।
3. राष्ट्रपति भवन भारत की शक्ति और गरिमा का प्रतीक है। यह अपनी विशाल वास्तुकला, मुगल गार्डन, दरबार हॉल और सैकड़ों कमरों के लिए प्रसिद्ध है, जो इसकी भव्यता और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं।
4. शपथ-ग्रहण समारोह के लिए संसद के सेंट्रल हॉल को सजाया जाता है। इसमें प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल के सदस्य, विदेशी राजनयिक और गणमान्य अतिथि शामिल होते हैं। समारोह की औपचारिकताएँ सैन्य रेजिमेंट और प्रोटोकॉल के अनुसार पूरी की जाती हैं।
5. राष्ट्रपति भवन भारतीय गणतंत्र, लोकतंत्र की गरिमा और राष्ट्र की एकता का प्रतीक है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (ग)
3. (क)
4. (ख)
5. (ख)

- **पाठ से आगे**

1. ताजमहल आगरा में स्थित एक विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारत है। इसे मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में सफेद संगमरमर से बनवाया था। यह अपनी बेहतरीन वास्तुकला और सुन्दरता के लिए दुनिया के सात अजूबों में से एक जाना जाता है।
2. राष्ट्रपति भवन दिल्ली में स्थित है और यह भारत के राष्ट्रपति का आधिकारिक निवास है। इसका डिज़ाइन ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस ने बनाया था। यह 330 एकड़ में फैला हुआ है, और इसमें 340 कमरे हैं। इसकी वास्तुकला में भारतीय और पश्चिमी शैलियों का अद्‌भुत मिश्रण देखने को मिलता है, और इसका 'मुगल गार्डन' (अब अमृत उद्यान) अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।

- **सत्य-असत्य**

1. (✓), 2. (✓), 3. (✕), 4. (✓), 5. (✓)

- **सोच-समझकर**

1. राधास्वामी वेंकटरमन ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि राष्ट्रपति भवन क्षेत्रफल की और वास्तुकला की दृष्टि से अत्यन्त विशाल और भव्य है। उसके ऊँचे गुंबद, अंतहीन गलियारे और सैकड़ों कमरों की तुलना में एक सामान्य मनुष्य शारीरिक कद बहुत छोटा प्रतीत होता है। यह कथन असली भव्यता के प्रति उनके विस्मय (आश्चर्य) और विनम्रता को दर्शाता है।
2. **स्पष्टीकरण** – भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। राष्ट्रपति भवन केवल एक इमारत नहीं है, बल्कि यह भारतीय गणराज्य की शक्ति, गरिमा और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। यह उस सर्वोच्च पद (राष्ट्रपति) का निवास स्थान है जो देश की एकता और अखंडता का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी विशालता और भव्यता भारत के गौरवशाली लोकतंत्र और उसके प्रमुख के संवैधानिक महत्व को दर्शाती है।

- **पंक्तियों पर चर्चाः**

1. लेखक राष्ट्रपति भवन की भव्यता, विशालता और सुन्दरता को देखकर इतना मंत्रमुग्ध और चकित हो गए कि वे कुछ समय के लिए सुध-बुध खो बैठे। उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे वे किसी दूसरी ही दुनिया में आ गए हों।
2. यह पंक्ति उस विशेष कार्यक्रम की सफलता और उसके प्रभाव को दर्शाती है। लेखक के लिए वह अनुभव इतना सुखद और अविस्मरणीय था कि उसकी यादें उसके मन में हमेशा के लिए अंकित हो गई हैं।
3. लेखक चाहते हैं कि राष्ट्रपति भवन और हमारा लोकतंत्र उन्हीं आदर्शों और सादगी पर चले जिनका सपना महात्मा गाँधी ने देखा था। यह पंक्ति देश के शीर्ष नेतृत्व के लिए गाँधीवादी मूल्यों की प्रासंगिकता और शुभकामनाओं को व्यक्त करती है।

- **रिक्त स्थान**

1. गाँधी जी
2. महात्मा गाँधी, राजघाट
3. अहमदाबाद
4. बिगुल, जैलसिंह
5. तुमुल-नाद

- **प्रत्यास्मरण**

सही विकल्प–

1. (घ) 3. (क)
2. (ग) 4. (घ)

- **भाषा आधारित**

	स्तंभ 'अ'		**स्तंभ 'ब'**
1.	शपथ ग्रहण समारोह	(v)	संसद भवन का सेंट्रल हॉल
2.	रामास्वामी वेंकटरमन	(iv)	वर्तमान राष्ट्रपति (तत्कालीन संदर्भ में)
3.	निवर्तमान राष्ट्रपति	(iv)	ज्ञानी जैल सिंह
4.	आर.एस.पाठक	(ii)	मुख्य न्यायाधीश
5.	विशाल भव्य इमारत	(iii)	राष्ट्रपति भवन

- **भाषा आधारित**

समास विग्रह

(क) राष्ट्र का पति
(ख) अंग की रक्षा करने वाला
(ग) घोड़े का सवार
(घ) मंत्रियों का मंडल
(ङ) राज्य का पाल (पालक)
(च) लोक की सभा
(छ) राज्यों की सभा
(ज) राष्ट्र का गान

विशेषण पद

(क) प्रासाद – विशाल
(ख) पुस्तिका – आगंतुक
(ग) गाँधी – महात्मा
(घ) इमारत – भव्यतम
(ङ) शेरवानी – काली

(च) पाजामा – सफेद, चूड़ीदार

(छ) कालीन – लाल

(ज) कोट – सफेद लंबा

(झ) साफा – नीला और सुनहरा

(ञ) दस्ताने – सफेद

संधि विच्छेद

(क) श्रद्धा + अंजलि

(ख) पूर्व + अभ्यास

(ग) निः + संदेह (विसर्ग संधि)

(घ) उप + अध्यक्ष

(ङ) गोल + आकार

एक शब्द

(क) न्यायाधीश

(ख) जनसमूह

(ग) लोकसभा भवन/संसद

(घ) राष्ट्रपति भवन

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

9. जीवन नहीं मरा करता है

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. नयन सेज पर सोने वाला आँख का पानी।
2. 'जिल्द बदलती पोथी' का आशय है कि जिस प्रकार पुस्तक की जिल्द को बदलकर उसमें दूसरी जिल्द चढ़ा दी जाती है उसी प्रकार आत्मा पुनः नया जीवन धारण करती है।
3. कवि ने 'धूप की धोती' आत्मा के नवीन जीवन धारण करने को कहा है।
4. तम यहाँ जीवन में आने वाले कष्टों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
5. दर्पण नहीं मरा करता है से कवि का तात्पर्य है किसी व्यक्ति या वस्तु के चले जाने से जीवन की वास्तविक सत्यता समाप्त नहीं होती।

- **लिखित**

1. कवि कहता है कि कुछ इच्छाएँ पूरी न होने से जीवन समाप्त नहीं होता। अतः मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए। उसे नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ना चाहिए।
2. कुछ घड़ों के टूट जाने से पनघट का महत्त्व नहीं घटता क्योंकि पनघट स्थायी और अटल है।
3. कश्तियों के डूबने का तट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वह स्थिर और दृढ़ रहता है।
4. पतझड़ में पत्ते झड़ जाते हैं परंतु उपवन ज्यों का त्यों बना रहता है। कुछ समय पश्चात पुनः वंसत आता है और हरियाली छा जाती है।
5. डूबे बिना नहाने वालों से कवि का तात्पर्य उन लोगों से है जो बिना परिश्रम और कष्ट उठाये सफलता पाना चाहते हैं।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ और प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' की 'जीवन नहीं मरा करता है' कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता श्री गोपालदास 'नीरज' जी हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने सकारात्मकता, आशा, और साहस का संदेश दिया है।

व्याख्या– कवि कहता है यदि माली उपवन को नष्ट भी कर दे तो सुगंध समाप्त नहीं होती। उसी प्रकार तूफान के आने पर खिड़की बन्द नहीं हो जाती, अर्थात् विपरीत परिस्थितियों के आने पर आशा, सत्य और सकारात्मकता का मार्ग बंद नहीं होता। कुछ लोगों की नफरत और आलोचना से सच्चाई और अच्छाई समाप्त नहीं हो जाती। कुछ व्यक्तियों के रूठ जाने पर या चले जाने पर जीवन की वास्तविकता समाप्त नहीं होती। इसलिए मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (घ)
3. (ग)
4. (ख)
5. (क)

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि किसी व्यक्ति को असफलता मिल जाए तो जीवन समाप्त नहीं हो जाता। वह पुनः प्रयास कर सकता है। जैसे पतझड़ के आने के बाद पुनः उपवन में बहार आ जाती है, वैसे ही जीवन में नए अवसर आते रहते हैं।
2. यदि हम केवल अतीत के दुखों में डूबे रहेंगे तो हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों प्रभावित होंगे। मन में निराशा बढ़ेगी और हम आगे बढ़ने का साहस खो बैठेंगे।

- **सोच-समझकर**

1. बचपन पर खिलौनों के खोने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि बचपन स्थायी और अटल है। उसे खिलौने अपने मोह के जाल में नहीं बाँध सकते।
2. जल्द बदलती पोथी का अर्थ है कि पुस्तक का बाहरी आवरण बदल जाता है, पर अंदर ज्ञान वही रहता है। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर नष्ट हो जाता है किन्तु आत्मा अमर रहती है अर्थात् मृत्यु केवल शरीर का परिवर्तन है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय –** थोड़ा पानी के बह जाने पर वर्षा ऋतु समाप्त नहीं हो जाती अर्थात् कुछ हानि या असफलता से जीवन समाप्त नहीं होता। इसलिए जीवन के संघर्ष से विचलित नहीं होना चाहिए।
2. **आशय –** कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। इसी प्रकार जीवन में कुछ परेशानियों के आ जाने पर जीवन का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। अतः पुनः आशावान बनकर आगे बढ़ना चाहिए।
3. **आशय –** पतझड़ के आने पर पेड़ों के पत्ते समाप्त हो जाते हैं, किन्तु बगीचा तो नष्ट नहीं होता। कुछ समय बाद वसंत हरियाली लेकर पुनः आता है। इसी प्रकार कठिन समय स्थायी नहीं रहता, पुनः नई आशा के साथ व्यक्ति को आगे बढ़ना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. कश्तियाँ, तट,
2. बढ़ाने, लौ,
3. माली, गंध,
4. बिखर, समस्या,
5. खोता, जिल्द।

- **सुमेलन**

1. (iii), 2. (iv), 3. (v), 4. (ii), 5. (i)।

- **भाषा आधारित**

1. (क) उपवन – बगीचा, वाटिका
   (ख) तट – किनारा, तीर
   (ग) तम – अंधकार, अंधेरा
   (घ) दिवस – दिन, दिवा
   (ङ) पानी – जल, नीर
   (च) आँख – नेत्र, नयन
2. **संयुक्ताक्षर**
   (क) समस्या – स्य
   (ख) ज्यों – ज्य
   (ग) तपस्या – स्य
   (घ) जिल्द – ल्द
   (ङ) कश्तियाँ – श्त
   द्वित्व व्यंजन
   कच्ची – च्च
3. **निषेधात्मक वाक्य**
   (क) जीवन मरा नहीं करता है।
   (ख) नयन सेज पर सोने वाला आँख का पानी नहीं है।
   (ग) माली ने उपवन नहीं लूटा है।
   (घ) दर्पण नहीं टूटा है।
   (ङ) माला नहीं बिखरी है।
4. (क) माली, (ख) दिवास्वप्न, (ग) जलचर, (घ) अनंत, (ङ) कुम्हार।

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र स्वयं करें।

10. कुसंग का ज्वर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** पर्वत, सम्मान, कटुभाषी, कुसंगति, भाग्यशाली, मंथरा, तुलसीदास, शाखाएँ, धर्मात्मा।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कुसंग का ज्वर भयानक होता है।
2. हंस ने कौए का साथ लिया।
3. कौए की संगति का हंस को परिणाम मिला, कि हंस पकड़ा गया।
4. समुद्र पर पुल रावण की संगति के कारण बाँधा गया।
5. बेर और केले का पेड़ साथ रहने पर केले के पत्ते तार-तार हो जाते हैं।

- **लिखित**

1. कौआ दुष्ट था। उसने हंस से कहा, "हंसराज भाई, आप तो स्वभाव के महात्मा है, आपके मन में मृदु और कटुभावी का भेद कैसा? मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ। इससे तो आपका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। हो सकता है आपके साथ रहकर मेरा उद्धार हो जाए।" हंस भोला-भाला था।
2. महाराज राम का राज्याभिषेक करने की तैयारी कर रहे थे। सहसा वज्रपात हो गया। राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ। सीता और लक्ष्मण भी वन को चले गये। राजा दशरथ की अचानक मृत्यु हुई, भरत ने भी अयोध्या का राजा बनना स्वीकार नहीं किया।
3. लंका में रावण जैसे राक्षसों का निवास था। राक्षसों की कुसंगति समुद्र की महिमा को ले बैठी। भारत के रामेश्वरम् से लेकर लंका के उत्तरी तट पर सौ योजन चौड़े सागर को सेतु द्वारा बाँध दिया गया। सागर की सारी महिमा मिट्टी में मिल गई।
4. केले के पास बेर का एक छोटा-सा पेड़ उग आया। केले ने सोचा, "चलो इससे हानि भी क्या है? अपने हिस्से की हवा पानी लेगा, मेरा क्या बिगड़ेगा? मेरा इससे न कुछ हिस्सा-बाँट है, न कुछ लेना-देना है।" उसे क्या पता था कि दुष्टों के पड़ोस में बसने से जीवन यंत्रणापूर्ण बन जाता है।
5. रहीमदास जी ने अपने दोहे में सीख देते हुए कहा है कि जो उत्तम प्रकृति के लोग होते हैं, उनका बुरी संगति कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, जैसे– चन्दन के पेड़ पर कितने ही सर्प लटके तथा चिपके रहते हैं किन्तु चंदन पर उसके विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ)
2. (ग)
3. (क)
4. (ख)
5. (ग)

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि हंस कौए की बात नहीं मानता तो कहानी का अन्त होता कि कौए का साहस नहीं बढ़ता और पकड़ा जाता।
2. यदि हम छुपकर किसी कार्य को करेंगे, तो वह हमारी संगति गलत होगी। अगर हम किसी भी कार्य को सभी के सहयोग व सोच-विचार कर करेंगे तथा सज्जनों की संगति ही अच्छी होती है।
3. यदि हम किसी को मित्र बनाना चाहेंगे तो हमारा मित्र विश्वासपात्र तथा हमें गलत कार्यो के बारे में समझायेगा और उस गलत कार्य को कभी भी नहीं करने देगा। हमारा सच्चा मित्र हमारी विपत्ति में साथ नहीं छोड़ेगा।

- **सोच-समझकर**

1. हंस को कौए की बात नहीं माननी चाहिए थी।
2. राजा दशरथ को भाग्यशाली इसलिए कहा

गया है कि उनके घर में भगवान स्वयं शरीर धारण करके अवतरित हुए थे।

3. कैकेयी को देवी समान माना गया, लेकिन दासी मंथरा की संगति के कारण उत्पात मचाया।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

आशय 1. यह बिल्कुल सत्य है, कि कुसंग एक भयानक ज्वर है, जो शरीर ही नहीं, मन और बुद्धि को भी कुंठित कर देता है। बड़े-बड़े वीर और धर्मात्मा भी कुसंगति में फँसकर दु:ख भोगते हैं। अत: हमें अच्छे लोगों के साथ संगति करनी चाहिए।

आशय 2. समुद्र के पड़ोस में लंका थी। लंका में रावण जैसे राक्षसों का निवास था। इसी कारण सागर पर कुसंगति का प्रभाव पड़ा और उसकी महिमा भी समाप्त हुई।

आशय 3. केले को कुसंगति के इस भयंकर ज्वर की पीड़ा भोगना अनिवार्य था, क्योंकि उसने अपने पड़ोस में बेर जैसे दुष्ट के बसाने से जीवन कष्टमय बना लिया।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. उद्धार 2. मंथरा 3. राक्षसों
4. यंत्रणापूर्ण 5. कुसंगति

- **किसने किससे कहा?**

किसने कहा?	**किससे कहा?**
कौए ने	हंस से
हंस ने	कौए से
कौए ने	हंस से
हंस ने	कौए से

- **सही मिलान कीजिए**

हंस – कौआ, दधिपात्र – ग्वाला, कैकेयी – मंथरा, बेर – केला, रावण – समुद्र।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **भाषा आधारित**

1. समानार्थक शब्द लिखिए–

(क) कागभुसुंड (ख) मराल
(ग) सागर (घ) नृप
(ङ) कदली
(च) दोस्त (सखा)

2. शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) दुर्बुद्धि (ख) हंस
(ग) धर्माचार्य (घ) अथाह

3. प्रयुक्त प्रत्यय और मूल शब्द अलग कीजिए–

	प्रत्यय	**मूल शब्द**
(क)	संग	कु
(ख)	भाव	अ
(ग)	मान	सम् (उपसर्ग)
(घ)	मान	अपन

4. वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) कौए और हंस द्वारा ग्वाले का दही खाया जाता है।
(ख) कैकेयी द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाता है।
(ग) बेर अपनी मस्ती में झूमता रहा है।
(घ) भरत द्वारा राज्याभिषेक कराया जाता है।
(ङ) राम द्वारा समुद्र पर पुल बाँध दिया जाता है।

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

11. मकर संक्रान्ति

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** अनुष्ठान, महाभारत, उत्तरायण, सरस्वती, कल्पवास, तमिलनाडु, उद्धार, धूमधाम।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मकर-संक्रांति पर्व अंग्रेजी के जनवरी महीने में आता है।
2. अर्द्ध कुंभ 6 वर्ष बाद आयोजित होता है।

3. गढ़वाल में मकर-संक्रांति को खिचड़ी संक्रांति के नाम से जाना जाता है।
4. मकर-संक्रांति पर्व पर राजस्थान के जयपुर शहर में पतंग की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।
5. भीष्म पितामह ने अपने प्राण मकर-संक्रांति के दिन त्यागे थे।

● **लिखित**

1. मकर-संक्रांति के दिन से मौसम में बदलाव आना प्रारंभ हो जाता है। इसी कारण रातें छोटी व दिन बड़े होने लगते हैं। सूर्य के उत्तरी गोलार्द्ध की ओर जाने के कारण ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ हो जाता है। सूर्य के प्रकाश में गर्मी और तपन बढ़ने लगती है। इसके फलस्वरूप प्राणियों में चेतना और कार्य शक्ति का विकास होता है।
2. गंगा सागर के इस मेले के पीछे एक पौराणिक कथा है कि आज के ही दिन गंगा जी ने स्वर्ग से अवतरित होकर भागीरथ के पीछे-पीछे चल कर कपिल मुनि के आश्रम में जाकर राजा सगर के साठ हजार शापग्रस्त पुत्रों का उद्धार किया था। इस घटना की स्मृति में इस तीर्थ पर गंगा सागर के नाम से मेले का आयोजन होने लगा। यहाँ से गंगा सागर में मिल जाती है।
3. राजस्थान में इस दिन महिलाएँ तिल तथा चूरमे के लड्डू बनाकर बुजुर्गों को देती हैं और आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। इस राज्य में मुख्य रूप से दाल, बाटी, चूरमा, खीर, पूरी आदि का भगवान को भोग लगाकर भोजन किया जाता है। कई जगहों पर दंगल का आयोजन भी किया जाता है। इस पर्व पर जयपुर में पतंग प्रतियोगिताएँ भी होती हैं।
4. गंगा-जमुना और सरस्वती के संगम पर तीर्थराज प्रयाग में मकर-संक्रांति पर्व के दिन सभी देवी-देवता, अपना स्वरूप बदल कर स्नान के लिए आते हैं। इस मौके पर प्रयाग के संगम स्थल पर प्रत्येक साल लगभग एक महीने तक माघ मेला लगता है, जहाँ लोग कल्पवास भी करते हैं। बारह साल में एक बार कुंभ मेला लगता है। यह भी लगभग एक महीने तक रहता है।
5. दक्षिण भारत में मकर-संक्रांति को पोंगल के रूप में मनाया जाता है। इस दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनाई जाती है। इस मौके पर बैलों की लड़ाई होती है। जिसे 'मट्टू पोंगल' कहते हैं। तमिलनाडु में तमिल पंचांग का नया साल पोंगल ही होता है।

● **अपनी समझ से**

सही विकल्प –

1. (ग) 2. (क) 3. (घ)
4. (ख) 5. (घ)

● **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. पर्वों और त्योहारों का हमारे जीवन में बहुत महत्व माना जाता है। मकर-संक्रांति का पर्व पूरे भारतवर्ष में अनूठे प्रकार से मनाया जाने वाला पर्व है। मकर-संक्रांति के साथ अनेक पौराणिक तथ्य जुड़े हुए हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ एकादशी का पर्व, दशहरे में गंगा स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान करने तथा शिवरात्रि का दिन भी एक हमारा पर्व है, जिसमें हम व्रत जागरण आदि करके पौराणिक परंपरा को निभाते हैं। उसी प्रकार होली, दीपावली तथा रक्षाबन्धन आदि के पीछे भी अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। ये हमारे भारतवर्ष में अनेक त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।
2. हमारे भारतवर्ष में तीर्थ-स्थान ही हमारी संस्कृति के संवाहक होते हैं। उसमें चाहे प्रयाग, केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि कोई भी हो। अनेक तीर्थ स्थ. ानों का हमारी संस्कृति पौराणिक महत्व है और पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जो हमारी संस्कृति का जोर-शोर से प्रसार करती हैं। हमारी संस्कृति ही हमारे अंदर अनेक गुणों को समाहित करती है।

● **सोच-समझकर**

1. मकर-संक्रांति भारत के प्रमुख पर्वों में से एक है। मकर-संक्रांति विभिन्न रूपों में पूरे भारतवर्ष में मनाई जाती है। यह त्योहार जनवरी महीने की चौदह तारीख को मनाया जाता है। इस पर्व पर महिलाएँ तिल के

लड्डू बनाकर खीर-पूड़ी बनाकर अपने बुजुर्गों एवं मान्य पक्ष के लोगों को बुलाया जाता है। भगवान का भोग लगाकर उनको भोजन कराते हैं तथा दक्षिणा में पैसे, कपड़े, शाल, जूते अनेक प्रकार की सामग्री सहित दाल और चावल तथा गजक, फल आदि देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन बच्चे पतंग भी उड़ाते हैं।

2. भारत विविधताओं का देश होते हुए भी इसमें अनूठी एकता समाहित है। संक्रांति के इस पर्व को विभिन्न नामों से जाना जाता है। पंजाब में लोहड़ी पर्व, उत्तराखण्ड में उत्तरायणी, गुजरात में उत्तरायण, केरल में पोंगल, गढ़वाल में खिचड़ी संक्रांति के नाम से मनाया जाता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

आशय 1. इस दिन पवित्र नदियों में स्नान, जरूरतमंदों को दान, पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध और धार्मिक अनुष्ठान का सनातन धर्म में अनंत महत्व है। इन कार्यों से जहाँ एक ओर पापों का नाश औरपितरों को शांति मिलती है, वहीं दूसरी ओर सूर्यदेव की कृपा से आरोग्यता और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

आशय 2. मकर-संक्रांति से मौसम में बड़ा बदलाव शुरू होता है क्योंकि सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश कर उत्तरायण होते हैं। इस दिन से दिन लम्बे और रात छोटी होने लगती है, जिसमें धूप तेज होती है। ठंड धीरे-धीरे कम होने लगती है। यह मौसम में गर्मी की शुरुआत और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. तमिलनाडु
2. राजस्थान
3. मट्टू
4. साठ हजार
5. भीष्म पितामह

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **सही मिलान कीजिए–**

(क)	**(ख)**
पंजाब	लोहड़ी
गढ़वाल	खिचड़ी-संक्रांति
उत्तराखण्ड	उत्तरायणी
गुजरात	उत्तरायण
केरल	पोंगल

- **भाषा आधारित**

1. निम्नलिखित विराम चिह्न का प्रयोग वाक्य में कीजिए–

(क) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ख) राधा, निधि और सुधा विद्यालय जा रही हैं।

(ग) हमारी अध्यापिका का नाम सुषमा शर्मा है।

(घ) महाकुंभ कितने साल बाद आता है?

(ङ) वाह! आपने तो गायनकला में कमाल कर दिया।

2. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए–

अनुष्ठान, उत्तरायण, उदार, तमिलनाडु, दान, पावन, पौराणिक, पोंगल, प्रथा, फलीभूत, भारत, शापग्रस्त, संस्कृति, सागर।

3. शब्द-समूहों के लिए एक शब्द–

(क) पौराणिक

(ख) शापित

(ग) संगम (प्रयाग)

(घ) अनुयायी

(ङ) आस्तिक

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) हमारा भारत महान है।

(ख) ताजमहल की शोभा अनुपम है।

(ग) इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान का बहुत महत्व है।

(घ) भारत में अनेक पर्व एवं त्योहार मनाये जाते हैं।

(ङ) भारत विविधताओं का देश होते हुए भी इसमें अनूठी एकता समाहित है।

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

12. दो कलाकार

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** इकलौती, गलतफहमी, खिचड़ी, पाठशाला, मूसलाधार, अखबार, शोहरत, प्रसिद्धि।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अरुणा और चित्रा के मध्य मित्रता का संबंध था।
2. चित्रा हॉस्टल छोड़ने के बाद विदेश गई।
3. चित्रा विदेश चली जाएगी, तो मैं कैसे रहूँगी, इसी कारण अरुणा कई दिन तक उदास रहती है।
4. अरुणा जमादार भाइयों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ाती है।
5. अरुणा और चित्रा में यथार्थवादी अरुणा है, क्योंकि अरुणा ने ही उन बच्चों को गोद लिया और उन्हें माँ-बाप का प्यार दिया।

- **लिखित**

1. अरुणा को तीन-चार बच्चे पढ़ने के लिए बुलाने आए थे।
2. अरुणा देर रात हॉस्टल में बाढ़ पीड़ितों की सेवा करके लौटी थी। उसकी हालत काफी खस्ता हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आई थी मानो छह महीने से बीमार हो।
3. बाढ़ पीड़ितों की सहायता में अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती।
4. मृत भिखारिन और उसके सूखे शरीर से चिपके हुए दो बच्चों वाली घटना महत्वपूर्ण है क्योंकि एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा– "बता दूँ?" और उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली– "ये ही वे दोनों बच्चे हैं।"

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 2. (ग) 3. (क)
4. (घ) 5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. चित्रा चित्रकला से जुड़ी है और अरुणा समाज सेवा से। इस दृष्टि से अरुणा को भी कलाकार माना जा सकता है। चित्रा केवल चित्रकला द्वारा अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करती है तथा धन कमाती है लेकिन अरुणा असहायों की सेवा निःस्वार्थ ही करती है।
2. 'दो कलाकार' कहानी का मूल उद्देश्य यह है कि चित्रा अपनी चित्रकला का प्रदर्शन करती है। अरुणा एक ऐसी कला. कार है, जो असहायों एवं निर्धन जनता की सेवा कर अपनी यथार्थवादी कला को महत्वपूर्ण बनाती है अर्थात् शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

आशय 1. "अरे यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है? चित्रा ने अरुणा से कहा–"जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?" तेरी बेबकूफी का। आई है बड़ी प्रतीक वाली।" "अरे अरुणा, यह चित्र आज की दुनिया के कन्फ्यूजन का प्रतीक है, समझी।" बिना मतलब जिंदगी खराब कर रही है।

आशय 2. धनी पिता की इकलौती सन्तान ठहरी तेरी इच्छा कभी टाली नहीं जा सकती है। लेकिन सच यह है कि मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती।

आशय 3. जब चित्रा स्टेशन पर लड़कियों के साथ पहुँची तो वहाँ उसे सभी दिखाई दे रहे थे। वह उस भिखारिन का चित्र भी लेकर

गई, लेकिन उस मृत के दोनों के बच्चों को सनाथ करने वाला कोई नहीं था। चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही है। मगर अरुणा तो केवल जीवित प्राणियों की सेवा में लगी थी। इस कारण अरुणा रेल स्टेशन पर दिखाई न पड़ी।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

  1. चित्रकार 2. पढ़ाती 3. विदेश
  4. प्रदर्शनी 5. बच्चे

- **सही-गलत**

  1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **क्रम संयोज**u

  1. (4), 2. (6), 3. (2), 4. (8), 5. (5), 6. (1), 7. (3), 8. (7)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. आज के मानव ने पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ की है जिस कारण प्रकृति प्रकोप बढ़ रहा है। मानव ने आज पेड़ों की कटाई की है जिस कारण बाढ़ आ रही है। प्रकृति में जो पर्वत है उनको काटा जा रहा है, जंगलों की जगह समतल भूमि बनाकर मकान बनाए जा रहे हैं, इन्हीं कारणों से बाढ़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है।
2. हमें एक रोता हुआ बालक मिलता है तब हम उस बच्चे के माता-पिता का पता लगायेंगे, बच्चे को चुप करायेंगे। उसकी देखभाल करेंगे, खाना-पीना, साफ-सफाई आदि का ख्याल रखते हुए पास की पुलिस चौकी पर सूचना लिखाऐंगे तथा बच्चे को तब तक अपने पास रखेंगे, कि जब तक उसके माता-पिता का पता नहीं चल जाता है।

- **भाषा आधारित**

1. **मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

   (क) अर्थ – प्रचार करना

   वाक्य प्रयोग– अरुण अपनी कक्षा में प्रथम आया उसने तो पूरे मोहल्ले में ढिंढोरा पीट डाला।

   (ख) अर्थ – आश्चर्य से देखते रह जाना। अपलक देखना।

   वाक्य प्रयोग – विस्मय से चित्रा की आँखें फैली रह गईं।

   (ग) अर्थ – अधिक कमजोरी होना

   वाक्य प्रयोग– पंद्रह दिन बाद अरुणा लौटी तो उसकी हालत खस्ता हो गई।

   (घ) अर्थ – लज्जित होना

   वाक्य प्रयोग– चित्रा अपने चित्र में बने बच्चों को अपने सामने देखकर कायल हो गई।

2. **निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए–**

   (क) कल तो उसे नहीं देखा था। – निषेधार्थक

   (ख) उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ कहाँ होती थीं? – प्रश्नवाचक

   (ग) जी हाँ! मैं अपने को रोक नहीं सकी। – विस्मयादिबोधक

   (घ) ये सचमुच के बच्चे नहीं थे मौसी। – निषेधार्थक

   (ङ) अरुणा सवेरे ही उसका सामान ठीक कर देना। – आज्ञार्थक

3. **निम्नलिखित वाक्यों में से निपात छाँटिए–**

   (क) भी

   (ख) थोड़े ही

   (ग) केवल

   (घ) लगभग

4. **दिए गए गद्यांश में उचित विराम चिह्नों को लगाइए–**

   चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया। "अरे! क्या है?" आँखें मलते हुए तनिक झुझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली– "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

13. थोड़ी दूर और मंजिल है

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● **शुद्ध लिखो और बोलो–** संसृति, मंजिल, निर्झर, विस्तृत, कंपन, प्रबल, प्यास, बढ़ते।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. कविता में बटोही को थका हुआ बताया गया है।
2. यात्री के पैर प्यास और थकान के कारण आगे नहीं बढ़ते हैं।
3. झरने पहाड़ों का हृदय चीरकर बहते हैं।
4. मानव स्वयं को प्यासा कहकर छल करता है।

● **लिखित**

1. पथिक को जब प्यास लगती है, तब मानव के प्राण प्यास से तड़पते हैं।
2. कवि ने मंजिल के बारे में बताते हुए कहा है कि हे! पथिक, बस तेरा गन्तव्य स्थान थोड़ी ही दूरी पर है।
3. पहाड़ का सीना चीर कर आगे बढ़ते झरने से प्रेरणा मिलती है कि मानव को आगे ही बढ़ते रहना चाहिए। विचलित नहीं होना चाहिए।
4. जब पथिक को प्यास लगती है, तब उसे अपनी मंजिल अधिक दूर दिखाई देती है।
5. कविता में कवि ने राही को आगे बढ़ते रहने का संदेश दिया है।

● **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. (ग)

● **सोच-समझकर**

1. यह कविता हमें अधिक अच्छी लगी। इस कविता में कवि ने आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया है।
2. कविता के माध्यम से कवि ने मानव के दृढ़ संकल्प को ही उसकी शक्ति बताया है जिससे सभी कठिनाई आसान दिखाई देने लगती हैं।
3. 'चल रे मुसाफिर'

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. कवि जीवन रूपी पथिक को आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।
2. मानव के भीतर अपार शक्ति और संभावनाएँ छिपी हुई हैं।
3. जीवन पथ की कठिनाइयाँ मनुष्य के दृढ़ संकल्प से आसान हो जाती हैं।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पत्थरों, प्रबल
2. निर्झर, पहाड़ों
3. मानव, छल
4. पैर, प्यास
5. प्यासा, विस्तृततर

● **सही-मिलान**

(क)	(ख)
प्राण	तड़पते
थके	बटोही
भारी	छल
सोती	संसृति
प्यास	प्रबल

● **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

● **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. खराब मौसम, सड़क की खराब स्थिति या ऊब महसूस करना जैसे कई कारक यात्रा को लंबा महसूस करा सकते हैं– (1) भौतिक कारक, (2) मानसिक कारक, (3) भावनात्मक कारक, (4) तैयारी का अभाव।

2. आत्म-संदेह, बाहरी आलोचना या अप्रत्याशित समस्याओं जैसी चुनौतियाँ किसी लक्ष्य की प्राप्ति के दौरान मानसिक उथल-पुथल पैदा कर सकती हैं।
आंतरिक बाधाएँ, बाहरी बाधाएँ, अनिश्चितता, **ध्यान भटकाने वाली चीजें–** आधुनिक जीवन ध्यान भटकाने वाली चीजों से भरा हुआ है जो प्राथमिक उद्देश्य से ध्यान हटा सकती है, जिससे आंतरिक संघर्ष उत्पन्न हो सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) बटोही (घ) पथिक
(ख) मंजिल (ङ) निर्झर
(ग) पहाड़ (च) मानव
2. **दो-दो पर्यायवाची शब्द**
(क) रास्ता, मार्ग
(ख) पर्वत, जंगम
(ग) मनुष्य, नर
(घ) पथिक, बटोही
3. **शब्दों में विशेषण**
(क) थका हुआ बहोही
(ख) मधुर संसृति
(ग) शीतल निर्झर
(घ) अत्यधिक प्यास
4. **विलोम शब्द**
(क) सबल
(ख) अधिक-सा/ज्यादा-सा
(ग) समीप
(घ) शान्त

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

14. आराध्या

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रारंभिक, शौवलर, किलोमीटर, हिम्मत, उज्ज्वल, आकांक्षा।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मौसम ठंडा होने पर आराध्या अपनी पहिये वाली कुर्सी को बालकनी में ले जाती थी।
2. आराध्या को स्कूल से लाने के लिए मम्मी जाती थी।
3. आराध्या की गोद में आकर पक्षी गिरा था।
4. स्कूल में विभिन्न प्रकार के व्यायाम और बोलना आराध्या को सिखाया जाता था।
5. बतख शौवलर प्रजाति की थी।

- **लिखित**

1. आराध्या के हाथ-पैर कमजोर थे, इसलिए बच्चों के साथ खेल नहीं सकती थी।
2. आराध्या धीरे-धीरे चलने के साथ हाथों से पेन, ब्रश या चम्मच जैसे सामान पकड़ना सीख गई थी।
3. नाश्ता करने के बाद आराध्या सहेली को टोकरी में लिटाकर अपने स्कूल के लिए तैयार होने चली गई।
4. आराध्या ने बतख को गोद में बैठाकर दूध पिलाया, बतख का नाम सहेली रखा। सहेली को टोकरी में सूखी घास रखकर सुलाया, पहले सहेली को नाश्ता कराया और बाद में खुद नाश्ता किया यानी कि सहेली (बतख) की आत्मीयता के साथ देखभाल की।
5. नहर के पानी में छोड़ने पर बतख (सहेली) धीरे-धीरे तैरने लगी और फिर पंख फड़फड़ाकर पानी में उछलने लगी। बतख तैरते-तैरते दूर निकल गई।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सहेली बतख का नाम था।
2. ठीक होने के बाद सहेली घर में एक कमरे से दूसरे कमरे में उड़ती रहती थी।
3. आराध्या के पिताजी उसे नहर के पास वाले पार्क में ले गए।
4. बच्चे बहुत देर तक उसे तैरते हुए देखते रहे।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) 2. (ग)
3. (क) 4. (ग)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. यदि आराध्या के स्थान पर मैं होता/होती तो घायल बतख को त्वरित क्रिया करते हुए घावों पर दवाई लगाता/लगाती। ठीक होने पर उसे अपने घर पालता/पालती, जिससे मुझे ऐसा लगता कि मैं जीव-जंतुओं की सेवा कर रहा/रही हूँ।
2. आराध्या के पापा यदि बतख को नहर के पानी में नहीं छोड़ते तो घर में बंदिश महसूस करती। आराध्या के पिता बतख को नहर के स्थान पर जंगल में छोड़ते तो सहेली का जीवन सुरक्षित नहीं रहता। बतख ऊँचा उड़ नहीं सकती, इसलिए अन्य जंगली जानवर बतख को मार सकते थे।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय –** स्नेह और प्यार को जीव-जंतु भी समझते हैं। घायल बतख जब आसमान से आराध्या की गोदी में गिरी और आराध्या के क्रियाकलापों को महसूस किया तो निर्भय होकर, दूध पीने के बाद आराध्या की गोद में ही लेट गई।
2. **आशय –** बचपन हर गम से बेगाना होता है लेकिन बच्चे भी एक-दूसरे के मनोभावों को समझते हैं। कॉलोनी में आराध्या को आये छः माह बीत गये परन्तु उसका कोई दोस्त नहीं था। बतख 'सहेली' और आराध्या के बीच अपनेपन को देखते हुए कॉलोनी के बच्चे भी घर आने लगे। धीरे-धीरे सभी दोस्त बन गए।

- **सही मिलान**

(क) (iv) आराध्या,
(ख) (iii) बतख,
(ग) (i) अंजू,
(घ) (ii) बंटी।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हमें कोई घायल पक्षी या जानवर मिलेगा, तो सबसे पहले अपनी सुरक्षा की दृष्टि से दस्ताने पहनेंगे और उसे धीरे उठाकर हवादार छेद वाले डिब्बे (जैसे– जूते का डिब्बा) में रखेंगे, उसे खाने-पीने अथवा दवा नहीं देंगे, क्योंकि हमारे अल्पज्ञान से पशु-पक्षी को नुकसान हो सकता है। इसलिए हम तुरंत किसी स्थानीय पशु-चिकित्सक या वन्यजीव बचाव केन्द्र से सम्पर्क करेंगे ताकि वे सही इलाज और पुनर्वास के लिए मार्गदर्शन कर सकें।
2. गर्मियों में प्रवासी पक्षी ठंडे प्रदेशों में इसलिए जाते हैं ताकि उन्हें प्रजनन के लिए अनुकूल और सुरक्षित जगह मिल सके, जहाँ भोजन (कीड़े-मकोड़े, फल) प्रचुर मात्रा में, घोंसला बनाने के लिए पर्याप्त और सुरक्षित जगह मिले और लंबी धूप के कारण चूजों को पालने के लिए ज्यादा समय मिले, जहाँ सर्द मौसम में गर्म स्थानों की तुलना में संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा कम होती है। वे असल में ठंडी जगहों (उत्तरी गोलार्ध) में सर्दियाँ बिताने के लिए गर्म जगहों (जैसे भारत) की ओर आते हैं और गर्मी आने पर वापस अपने ठंडे मूल स्थानों पर लौट जाते हैं।

   संक्षेप में, पक्षी गर्मियों में ठंडे स्थानों पर जाकर अपनी आबादी बढ़ाते हैं और सर्दी आने पर भोजन व आश्रय के लिए गर्म स्थानों की ओर प्रवास करते हैं, फिर गर्मी आते ही वापस अपने प्रजनन स्थलों पर लौट आते हैं।

- **भाषा आधारित**

उद्देश्य	विधेय
(क) सूरदास	हिंदी के कवि थे।
(ख) अंजू	बाजार जायेगी।
(ग) छवि	पुस्तक पढ़ रही है।
(घ) शिवाका	मिठाई खा रही है।
(ङ) प्रवीन	खाना खा रहा है।

2. (क) अंजू पुस्तक पढ़ेगी।
(ख) अमृतांश कल बाजार जायेगा।
(ग) रीमा चावल पकायेगी।
(घ) श्वेतांक विद्यालय जायेगा।
(ङ) रवीना दूध पीयेगी।

- **कल्पना आधारित**

1. पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता है। प्रकृति ने उन्हें उड़ने के लिए पंख दिये हैं। इन पंखों की मदद से उनकी उड़ने की प्रसन्नता देखते ही बनती है। पक्षियों का शरीर उड़ने के लिए अनुकूलित होता है। अगर मैं एक पक्षी होता, तो मैं सूर्यास्त तक चमकीले आकाश में ऊँचाई पर उड़ना और सूरज को समुद्र में डूबते देखना पसंद करता। मैं लोगों की नजरों से छिपकर तरह-तरह के पेड़ों से फल खाता।

   मैंने हमेशा बादलों पर सोने का सपना देखा है, हालांकि मुझे पता है कि यह इंसानों के लिए मुमकिन नहीं है। इसलिए, अगर मुझे एक दिन के लिए भी पक्षी बनने का मौका मिले, तो मैं बादलों में थोड़ी देर के लिए झपकी लूँगा। मैं आसमान में उड़ूँगा, शाम के रंगों का आनन्द लूँगा और रात तक अपने घोंसले में लौट आऊँगा।

2. यदि बादल पानी बरसाना बंद कर दे, तो प्रकृति एक भयावह सूखे और बंजर परिदृश्य में बदल जायेगी, जहाँ नदियाँ सूख जायेंगी, हरियाली खत्म हो जायेगी, जीव-जंतु प्यास से मर जायेंगे, और पृथ्वी का तापमान बहुत बढ़ जायेगा, जिससे अकाल और पारिस्थितिक तंत्र का पतन होगा, जिससे जीवन असंभव हो जायेगा।

   बारिश न होने से पृथ्वी की हरियाली खत्म हो जायेगी। पानी की कमी के चलते सभी जीव-जंतुओं का नष्ट होना निश्चित है। ऐसी स्थिति खाद्यान्न संकट पैदा करेगी, अकाल पड़ेगा और मानव जीवन खतरे में पड़ जायेगा। संक्षेप में, बादलों का पानी बरसाना करना प्रकृति के लिए मृत्यु के समान होगा, जिससे पृथ्वी एक निर्जन और शुष्क ग्रह में बदल जायेगी, जहाँ जीवन मुश्किल हो जायेगा।

- **खेल-आधारित (बुद्धि-परीक्षण)**

1. चुप्पी
2. कड़वी जुबान।

15. ठेले पर हिमालय

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** हिमालय, कौसानी, नैनीताल, आभास, निर्जन, हर्षातिरेक, आत्मलीन, सौंदर्य।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक बर्फ देखने कौसानी गए थे।
2. अपार सौंदर्य बिखरा था, सामने की घाटी में।
3. डाकबँगले के खानसामे ने हमें बताया कि आप लोग खुशकिस्मत हैं साहब।
4. लेखक ने ठेले पर लदी सिलों में हिमालय की छाया देखी।
5. जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो यह बस उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है।

- **लिखित**

1. लेखक नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से महाकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी पहुँचे। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नामों-निशान तक नहीं था। ढालों को काटकर बनाए हुए टेड़े-मेढ़े रास्ते। कोसी पहुँचते-पहुँचते सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।
2. कौसानी के अड्डे पर बस जाकर रुकी। छोटा-सा बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव जहाँ बरफ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। ऐसा लगा मानो लेखक ठगे गए।
3. बस से उतरा और जहाँ का तहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। वहाँ पर अपार सौंदर्य बिखरा पड़ा था, सामने की घाटी में। पर्वतमाला ने अपने आंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे।

पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इध्र-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी बहती हुई नदियाँ।

4. बिजली-सा विचार लेखक के मन में कौंधा कि इसी घाटी के पास वह नगाधिराज पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढक रखा है, और जो सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर है जो बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, "बरफ! वह देखो।"
5. लेखक एक पान की दुकान पर अपने अल्मोड़ा वासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी ठेले पर बरफ की सिलें लादे हुए एक बरफवाला आया। ठंडी, चिकनी चमकती बरफ से भाप उड़ रही थी। हम क्षणभर उस बरफ को अपलक देखते रहे, उससे उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, "यही बरफ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल ही यह शीर्षक मेरे मन में कौंध गया- ठेले पर हिमालय।

- **प्रत्यास्मरण**

1. पर्वत माला ने अपने अंचल में कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है।
2. लेखक के अनुसार इस घाटी में किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे।
3. सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते।
4. 'पर्वतमाला' का समास विग्रह होगा। (पर्वतों की माला)

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प-

1. (क) 2. (ख) 3. (घ)
4. (ख) 5. (ग)

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. हिमालय की शोभा
2. ढालों को काटकर
3. किन्नर, यक्ष
4. हर्षातिरेक, "बरफ! यह देखो।"
5. जलराशि, हिमालय की

- **सोच-समझकर**

1. घाटी का अपार सौन्दर्य बिखरा था। पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी थी। कौसानी के उस दृश्य को देखकर वह मूर्ति के समान खड़ा रह गया।
2. बरफ ही हल्की-सी झलक दिखाई देने पर लेखक ने सोचा- इन बादलों में यह क्या चीज है, जो अटल है। यह छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा और कैसा अजब रंग है इसका। न सफेद, न रूपहला, न हल्का नीला लेकिन इन तीनों का आभास देता हुआ। क्या है यह? बरफ तो नहीं है और बिजली-सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढक रखा है और जो सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर है जो बादलों की खिड़की से झाँक रहा है।
3. सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बरफ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी और घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा गहराने पर हम उठे। मुँह-हाथ धोए और चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, जिसे अन्दर-ही-अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।
4. लेखक नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से महाकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए पहुँचे। कोसी से एक सड़क अल्मोडा जाती है और दूसरी कौसानी कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नामोनिशान नहीं, सूखे-भूरे पहाड़, हरियाली का नामोनिशान तक नहीं था। ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े-मेढ़े रास्ते। कोसी तक पहुँचते-पहुँचते सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

● **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. पर्वतीय क्षेत्रों का प्राकृतिक सौंदर्य अद्वितीय होता है। पर्वतीय स्थल अपने प्राकृतिक, शांत वातावरण और अनूठी जीवन शैली के लिए जाने जाते हैं। यहाँ के ऊँचे पर्वत शिखर, बहती नदियाँ और घने जंगल मन को शांति प्रदान करते हैं। सुबह के समय सूर्य की किरणें जब चोटियों पर पड़ती हैं, तो पूरा परिदृश्य सुनहरा हो जाता है। यहाँ की ठंडी और ताजी हवा शहरी जीवन की थकान को दूर कर देती है। पर्वतीय क्षेत्रों में ट्रेकिंग, कैंपिंग और विभिन्न प्रकार के साहसिक खेल यात्रियों को एक अद्भुत अनुभव प्रदान करते हैं।
2. 'हिमालय' का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। दो मित्रों के मध्य संवाद के माध्यम से सिद्ध कीजिए।

दो मित्रों के मध्य संवाद–

राहुल – नमस्ते अमित! तुम जानते हो हमारे जीवन में हिमालय का क्या महत्व है।

अमित – हाँ राहुल, हिमालय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे 'पर्वतराज' भी कहा जाता है।

राहुल – यह भारत की जलवायु को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, है ना?

अमित – बिल्कुल यह जाड़ों में आने वाली ठंडी ध्रुवीय हवाओं को भारतीय भू-भाग पर आने से रोकता है, जिससे भारत इन हवाओं के प्रकोप से बच जाता है।

राहुल – इसके अलावा, हिमालय कई नदियों का उद्‌गम स्थल है, और यहाँ महत्वपूर्ण औषधियाँ भी पाई जाती हैं।

अमित – सही कहा, यह भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राकृतिक और राजनीतिक सीमा भी बनाता है।

राहुल – तो, हिमालय सिर्फ एक पर्वतशृंखला नहीं, बल्कि हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है।

अमित – हाँ, यह हमारे पर्यावरण और संस्कृति दोनों के लिए अमूल्य है।

● **भाषा आधारित**

1. समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

समास-विग्रह	**समास का नाम**
(क) हिम का आलय	तत्पुरुष समास
(ख) जल की राशि	संबंध तत्पुरुष
(ग) शीष पर आसन	अधिकरण तत्पुरुष
(घ) पर्वत की माला	संबंध तत्पुरुष
(ङ) तन्द्रा का आलस	संबंध तत्पुरुष
(च) प्रसन्न वदन (मुख)	कर्मधारय

2. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय व मूल शब्द अलग कीजिए–

प्रत्यय	**मूल शब्द**
(क) प्रद	कष्ट
(ख) ई	मखमल
(ग) पन	धुँधला
(घ) ता	खिन्न
(ङ) वट	थकान

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए–

(क) हम	– सर्वनाम
(ख) धीरे-धीरे	– क्रिया विशेषण
(ग) मैं	– सर्वनाम
(घ) हिमालय	– संबंधबोधक
(ङ) ठंडी, चिकनी	– नामधातु क्रिया

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) **अर्थ –** डरावना
वाक्य प्रयोग– कंचन का भयानक रूप देखकर मैं तो डर गई।

(ख) **अर्थ –** आश्चर्यचकित खड़े रह जाना
वाक्य प्रयोग– लेखक जहाँ का तहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया।

(ग) **अर्थ –** अत्यधिक प्रसन्नता
वाक्य प्रयोग – लेखक हर्षातिरेक से चीख उठा, "बरफ! वह देखो।"

(घ) अर्थ – शरीर के रोम खड़े हो जाना
वाक्य प्रयोग– बायीं ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती हुई पर्वतराज के हिम-शिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला।

(ङ) अर्थ – साफ, पवित्र
वाक्य प्रयोग– गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी।

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

16. अनोखा मुकदमा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रदूषण, मह. ाराज, शिकायत, मछलियाँ कहावत, जोहड़, रासायनिक, कुल्हाड़ी, संवाहक, पूर्ति।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. दरबार में जल, वायु और वातावरण के विरुद्ध शिकायत की गई थी।
2. पाठ के अनुसार बाढ़ आने के लिए आम जनता जिम्मेदार है।
3. पाठ के आधार पर पानी नदी, तालाब, कुएँ तथा पहाड़ों पर पाया जाता है।
4. लोगों के अनुसार वायु गन्दगी, कूड़ा न फैलाए तथा आँधी बनकर अंधड़ न लाए।
5. वायु को मरे हुए पशु-पक्षी, गन्दगी तथा कारखानों से निकलती गैस प्रदूषित करती है।

- **लिखित**

1. वर्षा कम होने के दो कारण हैं–
   (1) पहाड़ियों को काटकर समतल बनाना।
   (2) वनों की कटाई व जंगलों को नष्ट करना।
2. कूड़ा-करकट घर, विद्यालय, गली, मुहल्ले आदि को गंदा करते हैं तथा पानी में गन्दगी जाने से पानी एवं वायु दोनों को दूषित करता है।
3. जब हवा दूषित हो जाती है, तो वह प्राणहारी बन जाती है। जहरीली गैसें तथा गन्दा वातावरण ही हवा को प्रदूषित करता है।
4. पहाड़ पर बसे गाँव को बाढ़ में बह जाने का पानी ने कारण बताया कि मैं हमेशा देखकर चलता हूँ। इसलिए सदा ढलान की ओर जाता हूँ। कभी अपने आप ऊँची जगह नहीं चढ़ता हूँ। महाराज इनके गाँव के पास एक पहाड़ है। पहले उस पर बहुत से वृक्ष होते थे। जब में पहाड़ पर बरस कर नीचे उतरता था, तब वृक्ष-कुंजों से होकर नीचे आता था। पहाड़ से धीरे-धीरे नीचे उतर कर सीधे नाले में चला जाता था। अब वृक्षों को साफ कर दिया तथा घर और कारखाने बना लिए हैं। अब में पहाड़ से उतरता नहीं हूँ, लुढ़कता हूँ।
5. वायु ने कहा कारखानों से निकलती गैस और गंदगी मुझमें घुल-मिल जाती है। मैं जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती हूँ। मुझे आज भी वह काला दिन याद है, जब भोपाल में एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझ पर सवार होकर दूर-दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग मौत के मुँह में चले गए थे।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (ग)
3. (ख)
4. (ग)
5. (ग)

- **सोच समझकर**

1. हवा का बहना बंद होने पर सभी घुटन महसूस करने लगे, क्योंकि हवा जीवनदायिनी है।
2. जल पूजन के नाम पर लोग अवांछित वस्तुएँ नहर, नदी, कुएँ में फेंक कर जल को प्रदूषित करते हैं। पीने के पानी के तालाब में पशुओं को नहलाते हैं।

   इस कारण तथा कारखानों का गन्दा पानी जल को प्रदूषित करता है। जल प्रदूषण एवं जल से होने वाली क्षति के लिए जल नहीं अपितु आमजन दोषी है। अपनी गलतियों को सुधारों तथा पानी को निर्मल एवं उपयोगी रहने दो। इसकी बचत करो।
3. हवा प्रदूषित होकर लोगों को क्षति पहुँचाती है। कारखानों से निकलता धुआँ और गैस तथा गन्दगी घुल-मिल जाती है। हवा जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती है। जहरीली गैस मिलाकर हवा को प्राणदायी से प्राणहारी न बनाएँ।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इन पंक्तियों का आशय यह है कि हमें हवा में जहरीली गैस या अन्य प्रदूषक नहीं मिलाने चाहिए। प्राणदायी का अर्थ जीवन देने वाला

और प्राणाहारी का अर्थ जीवन लेने वाला होता है, इसलिए यह हवा को दूषित न करने का आग्रह करती है, ताकि वह जीवन के लिए हानिकारक न बन जाए।

2. यदि हम जल और वायु को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखेंगे, तो वे हमारे मित्र बने रहेंगे। एक स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ जीवन और खुशहाली सुनिश्चित करता है, जिससे हमारा जीवन सुखी और समृद्ध होता है।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. संवाहक
2. रक्षा
3. जोहड़
4. पहाड़ियों
5. घर-कारखाने

● **किसने किससे कहा**

किसने कहा?	**किससे कहा?**
एक व्यक्ति ने	हवा से
दूसरे व्यक्ति ने	जल से
राजा ने	व्यक्तियों से
एक व्यक्ति ने	जल से
मंत्री ने	हवा से

● **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✕), 3. (✓), 4. (✕), 5. (✓)।

● **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि पानी नहीं होगा, तो हमारा जीवन निरर्थक हो जायेगा। पानी के बिना पानी पीना, नहाना, धोना, खाना बनाना सभी समाप्त हो जायेगा। हमारी दिनचर्या एवं जीना दुर्लभ हो जायेगा।
2. बरसात के पानी को तालाब के माध्यम से बचत करेंगे तथा पीने के पानी को किसी टंकी अथवा हौद में जमा कर बचत कर सकते हैं।
3. यदि लोग साफ-स्वच्छ रहने की आदत न अपनाएँ, तो वह बीमारी के शिकार हो जायेंगे। जिसके परिणाम अधिक बुरे दिखाई देंगे।

● **भाषा आधारित संवाद**

(क) **कुर्सी** – महाराज, कुर्सी की महिमा समाप्त होती जा रही है। मुझे हर व्यक्ति चाहे अच्छी जगह है, चाहे खराब जगह हर जगह पर खींचकर डाल देता है और मुझ पर सवार हो जाता है। वह मेरी हालत को नहीं देखता कि मुझमें वजन भर सहने की शक्ति है, कि नहीं। मेरी हालत खस्ता हो जाती है। आज के समय में राजनीति का हाल भी समाज पर छाया हुआ है कि कुर्सी के चक्कर में कभी भी कहीं भी गोलियाँ तक चल जाती हैं। कुर्सी की इतनी होड़ लगी हुई है।

(ख) **पेड़**– अब लोगों ने वृक्षों का महत्व भुला दिया है। महाराज आप इन लोगों को समझाइए। यह पेड़ों को काटे नहीं बल्कि नये पेड़ अधिक से अधिक लगायें।

महाराज–पेड़ एक जीवित प्राणी है। इसे मानव के समान प्रकाश, खाना, पानी इन सभी चीजों की आवश्यकता है जिसका कोई भी ध्यान नहीं देता। पेड़ से फूल, फल तथा लकड़ी भी फर्नीचर बनाने के काम में प्रयोग की जाती है।

2. **लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग**

(क) दोनों ओर से नुकसान

वाक्य प्रयोग– कर्ज चुकाने के लिए रमेश ने घर बेचा, तो अब रहने के लिए छत नहीं है। सच में इधर कुआँ, उधर खाई है।

(ख) कम ज्ञानी में अहंकार अधिक होता है।

वाक्य प्रयोग– राहुल खुद तो परीक्षा में मुश्किल से पास हुआ है, लेकिन दूसरे को बुद्धू कह रहा है। सही कहा है, अधजल गगरी छलकत जाय।

(ग) अयोग्य को बहुत मूल्यवान मिल जाना।

वाक्य प्रयोग– सुरेश के पास नौकरी के लिए न डिग्री थी न अनुभव, फिर भी मैनेजर की पोस्ट मिल गई, यह तो वही बात हुई कि अंधे के हाथ बटेर लग गई।

(घ) जिसका जो काम होता है, वही उसे कुशलता से कर सकता है।

वाक्य प्रयोग– अजय ने अपने अनुभवी मैकेनिक के बिना खुद ही कार का इंजन खोलने की कोशिश की तो कार ठीक होने की बजाय पूरी तरह बंद हो गयी। तभी कहा है- जिसकी बंदरी वही नचावे, और नचावे तो काटन धावे।

(ङ) गुण-अवगुण या अच्छे-बुरे के बीच कोई फर्क न किया जाए।

वाक्य प्रयोग– सरकारी दफ्तर में चोर और ईमानदार दोनों बराबर हैं, सचमुच वहाँ तो अंधेर नगरी चौपट राजा वाली हालत है।

3. (क) दुर् + उपयोग
   (ख) मनः + हर
   (ग) लोक + उक्ति
   (घ) परि + आवरण
4. **उचित विराम चिह्न लगाइए–**
   राजा– इस संबंध में आप लोगों को कुछ कहना है?
   (कोई कुछ नहीं बोलता है, सभी सिर झुका लेते हैं।)
   राजा– अभी तो सब कह रहे थे– हमारी सुनो, हमारी सुनो। अब हवा एवं जल की दलील सुनकर सबकी बोलती बंद हो गई। खैर, आपने अपनी शिकायत के प्रत्युत्तर में हवा का दुख सुन लिया है। वायु को दूषित होने से बचाना आपके ही हाथ में है। जल और वायु को मित्र बनाएँ और अपने जीवन को सुखी-समुन्नत करें।

- **क्रियाकलाप आधारित**
  1. जल चक्र बनाकर शिक्षक को दिखाएँ।
  2. एवं 3. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

17. झाँसी की रानी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–**
  स्वतंत्रता, सिंहनी, विषम, मर्दानी, आजादी, तलवार।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. रानी लक्ष्मीबाई की तलवार सन् सत्तावन में फिर चमक उठी थी।
2. झाँसी वाली रानी का लक्ष्मीबाई नाम था।
3. युद्ध में जख्मी होकर लेफ्टिनेंट वॉकर भाग गया था।
4. युद्ध क्षेत्र में रानी की काना और मुंदरा नाम की सखियाँ साथ थीं।
5. अंग्रेजों से युद्ध करते समय रानी की उम्र तेईस वर्ष थी।

- **लिखित**

1. सभी भारतीयों ने खोई हुई आजादी की कीमत समझ ली थी और अंग्रेजों (फिरंगी) को देश से बाहर निकालने का पक्का मन बना लिया था।
2. हमने झाँसी वाली रानी की कहानी बुंदेलखण्ड के लोक गायकों (हरबोलों) के मुँह से सुनी थी।
3. डलहौजी तब मन ही मन हरषाया (प्रसन्न हुआ) जब 1853 में झाँसी के महाराजा गंगाधर राव का निधन हो गया और उनका कोई प्राकृतिक वारिस नहीं था।
4. ग्वालियर के तत्कालीन महाराजा सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ देने के लिए रानी लक्ष्मीबाई का साथ छोड़ दिया था।
5. स्वतंत्रता की नारी लक्ष्मीबाई को कहा गया है, क्योंकि केवल तेईस वर्ष की आयु में लक्ष्मीबाई एक अवतार की तरह आईं, जो गुलामी में जी रहे भारतीयों में स्वतंत्रता की नई चेतना और जोश भरने का माध्यम बनीं।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' से सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री रानी लक्ष्मीबाई के अंतिम समय का वर्णन कर रही हैं, जब वे युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त होती हैं। वे उनके बलिदान को एक दिव्य मिलन के रूप में प्रस्तुत कर रही हैं।

व्याख्या– रानी लक्ष्मीबाई युद्ध भूमि में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं (सिधार गईं) और उनकी चिता उनकी अंतिम सवारी बनी, जिसे कवयित्री ने दिव्य कहा है। उन्होंने कहा कि रानी का तेज

(वीरता और ओज) साक्षात ईश्वर के तेज में मिल गया है, क्योंकि वह सच में उस असीम तेज की पात्र थीं। केवल तेईस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने जो वीरता दिखाई, वह सामान्य मनुष्य की नहीं, बल्कि साक्षात अवतार लग रही थीं। वे स्वतंत्रता की देवी बनकर भारतवासियों में नई जान फूँकने आई थीं, उन्होंने सही रास्ता दिखाया और वह सीख दे गईं जिसकी देश को जरूरत थी। हरबोलों (गायक जाति) के मुँह से हमने यह कहानी सुनी है कि वह मर्दों जैसी वीरता से लड़ने वाली झाँसी की रानी थीं।

- **अपनी समझ से**

1. (ग) 2. (क)
3. (घ) 4. (क)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. यदि रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सेना ने अंग्रेजों का सामना नहीं किया होता, तो झाँसी को 1858 में ही बहुत पहले ही, बिना किसी खास प्रतिरोध के ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता। रानी को अपनी सत्ता सम्मान और गोद लिए पुत्र दामोदर राव के उत्तराधिकार से वंचित होना पड़ता। झाँसी अपनी स्वतंत्रता खो देता और प्रजा को अंग्रेजों के अधीन घोर शोषण व अत्याचारों का सामना करना पड़ता।

   झाँसी की संभावित दशा (यदि संघर्ष नहीं होता)

   1. राज्य का विलय– लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति के तहत झाँसी को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया जाता।

   2. दामोदर राव को मान्यता नहीं– अंग्रेजों द्वारा दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकारी मानने से इनकार करने के कारण राजशाही पूरी तरह से समाप्त हो जाती।

   3. रानी की दुर्दशा– रानी लक्ष्मीबाई को एक पेंशन भोगी शासक बनकर रहना पड़ता या उन्हें बंदी बना लिया जाता।

   4. प्रजा पर अत्याचार– झाँसी की समृद्ध संस्कृति और जनता को अंग्रेजों के सीधे शासन में कर (टैक्स) व अत्याचारों का सामना करना पड़ता।

   5. प्रतिरोध की मशाल– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक बड़ी प्रेरणा खोनी पड़ती, क्योंकि रानी की बहादुरी (1857 की क्रांति) एक मिसाल बन गई।

   संक्षेप में, बिना युद्ध के झाँसी का अस्तित्व ही एक स्वतंत्र राज्य के रूप में खत्म हो जाता।

2. बुंदेले हरबोलों ने रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस, वीरता और अंग्रेजों के खिलाफ अंतिम साँस तक लड़ीं गई जंग को लोक गीतों (आल्हा शैली) में अमर किया है। वे रानी को 'मर्दानी', 'झाँसी वाली रानी' और 'स्वतंत्रता की मशाल' कहकर उनकी वीरता का वर्णन करते होंगे, जिसमें स्वाभिमान, बलिदान और युद्ध का दृश्य प्रमुख होता है।

   बुंदेले हरबोलों के गाने का अंदाज और प्रमुख भाव

   1. वीर रस का ओज– हरबोले पूरी ओजस्विता (जोश) के साथ, ऊँचे सुर में गाते हैं। उनके स्वर में रानी के प्रति सम्मान और अंग्रेजों के लिए आक्रोश होता है।

   2. युद्ध वर्णन– गानों में "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी" का मुख्य गान होता है। वे रानी की तलवारबाजी, घुड़सवारी और शत्रुदल का नाश करने का सजीव चित्रण करते हैं।

   3. स्वाभिमान और बलिदान– वे गाते होंगे कि कैसे रानी ने "मेरी झाँसी नहीं दूँगी" के प्रण के साथ अंतिम समय तक संघर्ष किया, भले ही उन्हें ग्वालियर के पास वीरगति प्राप्त हुई।

   4. भावात्मक संबंध– बुंदेलखण्ड के लोकगीत रानी को अपनी बेटी या बहन की तरह प्रेम और गर्व से याद करते हैं, क्योंकि उन्होंने बाँदा के नबाव अली बहादुर जैसे साथियों के साथ मिलकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी।

   5. प्रेरणा– हरबोले यह भी गाते हैं कि रानी की समाधि हमें उनके साहस और देशभक्ति की प्रेरणा देती है।

   6. प्रस्तुति– यह कहानी एक किस्सागोई (कहानी सुनाने) के रूप में गाई जाती है, जिसमें "खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी" पंक्ति को बुंदेली लोक शैली

और भाषा का प्रयोग करते हुए, बार-बार दोहराकर जोश भरा जाता है।

- **भाव चर्चा**

1. सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता की यह पंक्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतवासियों में जागी राष्ट्रप्रेम की चेतना को दर्शाती है। इसका भाव यह है कि अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के कारण जब देशी राजाओं और आम जनता ने अपना सुख-चैन और स्वतंत्रता खो दी, तब सबको आजादी का मूल्य समझ में आया और वे फिरंगी (अंग्रेजों) को देश से बाहर निकालने के लिए एकजुट हो गए।

   संक्षेप में, यह पंक्ति उस समय की जागृति को दर्शाती है, जहाँ हार के बाद एक नया जज्बा आया और हर भारतीय ने आजादी को पाने के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने का मन बना लिया था।

2. यह पंक्ति सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' से ली गई है।

   भावार्थ – इस पंक्ति का अर्थ है कि लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व कोमल नहीं, बल्कि अत्यंत वीरांगना और साहसी था। कवयित्री ने तलवार और चूड़ियों के माध्यम से रानी के पौरुष (वीरता) को उजागर किया है। वे कहना चाहती हैं कि जिनके हाथ शत्रुओं का नाश करने के लिए बने हों, वे चूड़ियाँ पहनकर घर में नहीं बैठ सकते। युद्ध क्षेत्र में रानी ने जब तलवार उठाई, तब उन्होंने दिखा दिया कि वे एक मर्दानी (वीर सैनिक) हैं, न कि कोई अबला। उनके लिए चूड़ियों से बेहतर तलवार थी, अर्थात् संघर्ष और आजादी की लड़ाई।

   संक्षेप में, यह पंक्ति रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, अदम्य साहस और युद्ध कला में उनकी निपुणता को रेखांकित करती है।

3. "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित यह पंक्ति 1857 की रानी लक्ष्मीबाई की अदम्य वीरता, शौर्य और देशभक्ति का गुणगान करती है। इसका अर्थ है कि वह झाँसी की रानी एक वीर पुरुष (मर्दानों) की भाँति अंग्रेजों से जमकर लड़ीं और उन्होंने अपने साहस से पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया, जिससे वे भारतीय इतिहास में अमर हो गईं।

   भावार्थ – रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध के मैदान में पुरुषों की तरह (मर्दानी होकर) अंग्रेजों से मुकाबला किया। यह पंक्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी के युद्ध का वर्णन करती है। यह महिलाओं की ताकत और साहस को दर्शाती है। यह पंक्तियाँ उस ऐतिहासिक संघर्ष को याद करती हैं, जहाँ रानी ने अपने राज्य और देश की रक्षा के लिए अंत तक संघर्ष किया।

4. "बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।" सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी' की अमर पंक्तियाँ हैं। ये पंक्तियाँ 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन करती हैं, जिन्हें बुंदेलखण्ड के लोकगायकों (हरबोलों) के मुँह से सुना गया था।

   भावार्थ – हरबोलों का अर्थ बुंदेलखण्ड के पारंपरिक गायकों से है जो ऐतिहासिक गाथाएँ गाते हैं। यह पंक्ति उनके द्वारा गाई गई गाथाओं पर आधारित है। यह पंक्ति रानी लक्ष्मीबाई के साहस, पराक्रम और अंग्रेजों के खिलाफ उनकी लड़ी गई लड़ाई की याद दिलाती है, जिन्होंने मर्दों की तरह युद्ध किया। इस कविता ने लोगों में देशभक्ति की लौ जलाई और यह स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बहुत लोकप्रिय हुई।

5. "दिखा गई पथ सिखा गई, हमको जो सीख सिखानी थी।" पंक्ति का भावार्थ है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने जीवन और संघर्ष से हमें स्वतंत्रता, वीरता और स्वाभिमान का मार्ग दिखाया।

   भावार्थ– रानी लक्ष्मीबाई ने बहादुरी का उदाहरण पेश कर हमें सही मार्ग दिखाया। हमें यह सीख मिली कि विपरीत परिस्थितियों में भी साहस नहीं छोड़ना चाहिए। यह पंक्ति हमें अपनी रक्षा और स्वाभिमान के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती है। रानी लक्ष्मीबाई ने केवल लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार न मानने का पाठ सिखाकर हमें निडर होकर जीना सिखाया।

संक्षेप में, यह पंक्ति राष्ट्र के लिए बलिदान और नारी शक्ति की सर्वोच्च प्रेरणा को दर्शाती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जवानी,
2. लक्ष्मीबाई
3. डलहौजी
4. ग्वालियर
5. तेज

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मैं रानी लक्ष्मीबाई के स्थान पर होती, तो मैं भी अंग्रेजों के सामने समर्पण न करके "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी" के प्रण के साथ साहसपूर्वक लड़ी होती। मैं भारतीय सैनिकों को एकजुट करती, गोरिल्ला युद्ध नीति का उपयोग करती और स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती।

रानी लक्ष्मीबाई के स्थान पर किए जाने वाले कार्य

1. अदम्य साहस और प्रतिशोध– मैं ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से युद्ध का नेतृत्व करती।

2. सेना को एकजुट करना– पड़ोसी रियासतों के राजाओं से सहायता माँगकर एक मजबूत गठबंधन तैयार करती।

3. स्वदेशी सुरक्षा– झाँसी के नागरिकों को आत्मनिर्भर बनने और विदेशी अत्याचारों के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित करती।

4. तलवार और रणनीति– युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए, अंग्रेजों को हर मोड़ पर कड़ी टक्कर देती।

5. नारी शक्ति का प्रदर्शन– एक महिला के रूप में रूढ़ियों को तोड़कर, युद्धभूमि में अपने दत्तक पुत्र को पीठ पर बाँधकर निर्भीकता से लड़ती।

6. राष्ट्र प्रेम– 'स्वराज्य' को सर्वोच्च प्राथमिकता देती और मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटती।

2. यदि लक्ष्मीबाई जैसी अनेक वीरांगनाएँ (जैसे– झलकारी बाई, बेगम हजरत महल) 1857 में एक साथ अंग्रेजों का सामना करतीं, तो अंग्रेजों की दशा अत्यन्त दयनीय हो जाती और भारत बहुत पहले आजाद हो सकता था। अंग्रेजों को भारी जन-धन की हानि होती, उनका मनोबल टूट जाता और उन्हें जल्द ही भारत छोड़कर भागना पड़ता, क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई जैसी नेतृत्व क्षमता और अदम्य साहस का सामना करना, अंग्रेजों के लिए नामुमकिन था।

संभावित परिणाम और अंग्रेजों की दशा

1. सैन्य और प्रशासनिक विफलता– यदि हर रियासत में रानी लक्ष्मीबाई जैसी साहसी महिलाएँ नेतृत्व करतीं, तो अंग्रेजों के लिए अपनी सत्ता बनाए रखना मुश्किल हो जाता। वे चकित और भ्रमित रह जाते।

2. हौसले पस्त– अंग्रेज जनरल ह्यूरोज ने भी लक्ष्मीबाई को विद्रोही नेताओं में खतरनाक माना था। ऐसी कई वीरांगनाएँ उनके लिए एक "सबसे बड़ा खतरा" साबित होतीं।

3. राष्ट्रव्यापी जन-आंदोलन– यह संघर्ष एक व्यापक जन आंदोलन बन जाता, जिससे अंग्रेजों को स्थानीय समर्थन (जो उन्हें कुछ हद तक मिला) मिलना पूरी तरह बंद हो जाता।

4. औपनिवेशिक शासन की समाप्ति– एक संगठित और व्यापक प्रतिरोध से अंग्रेजों को अपनी कमजोरियों का अहसास होता और उन्हें भारत से वापस जाने के लिए मजबूर होना पड़ता।

संक्षेप में, लक्ष्मीबाई जैसी कई वीरांगनाओं का एक साथ आना, स्वतंत्रता की लड़ाई में निर्णायक भूमिका निभाता और गुलामी की जंजीरें बहुत पहले ही टूट जातीं।

- **भाषा आधारित**

1. विपरीतार्थक शब्द

पुरानी	– नई	सिंहनी	– सिंह
घोड़ा	– घोड़ी	नाला	– नदी
रानी	– राजा	आशा	– निराशा
छात्रा	– छात्र	विच्छेद	– संधि

2. मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग

(क) अगूँठा दिखाना – उसने मदद के

समय **अगूँठा दिखा दिया**।

(ख) दाल में कुछ काला होना – श्याम के अचानक अमीर बनने की बात सुनकर सभी लोगों को लगा कि **दाल में कुछ काला** है।

(ग) काली घटा घिरना – जब से राजा की मृत्यु हुई, रानी के जीवन में **काली घटा घिर आई**।

(घ) मुँह की खाना – कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना को **मुँह की खानी पड़ी**।

- **कल्पना आधारित**

1. यदि राजा गंगाधर राव जीवित होते, तो रानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के युद्ध में उतरने का सीधा अवसर शायद न मिलता। तब झाँसी एक रियासत के रूप में बनी रहती, न कि हड़प नीति के तहत अंग्रेजों द्वारा छीनी जाती।

1. शासक की भूमिका– गंगाधर राव की मृत्यु के बाद ही लॉर्ड डलहौजी ने उनके दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इन्कार किया। यदि राजा जीवित होते तो झाँसी का विलय न होता।

2. युद्ध की परिस्थितियाँ– युद्ध का मुख्य कारण राज्य को छीनना था, जो जीवित राजा के समय नहीं होता।

3. रानी का व्यक्तित्व– यद्यपि युद्ध का अवसर न मिलता, लेकिन रानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व और घुड़सवारी/तलवारबाजी में निपुणता को देखते हुए, उन्हें राज्य की राजनीति और सुरक्षा में एक सक्रिय सलाहकार की भूमिका अवश्य मिलती।

निष्कर्ष – यदि पति जीवित होते, तो रानी लक्ष्मीबाई "झाँसी की रानी के रूप में, जो स्वतंत्रता की महानायिका बनीं", वह भूमिका न होकर एक सम्मानित राजमाता की भूमिका में होतीं, जो राज्य के शासन में सक्रिय सहयोग देतीं।

2. यदि रानी लक्ष्मीबाई को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध कौशल की शिक्षा नहीं मिली होती, तो उनका एक योद्धा के रूप में अंग्रेजों का मुकाबला करना और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की एक महान नायिका के रूप में इतिहास बनना लगभग असंभव होता। शिक्षा और शारीरिक प्रशिक्षण ने ही उन्हें एक निडर नेता बनाया।

1. युद्ध कौशल के बिना क्या होता?– यदि वह प्रशिक्षित नहीं होतीं, तो शायद एक आम रानी की तरह अंग्रेजों की कुटिल 'हड़प नीति' के सामने झुक जातीं या केवल एक मूकदर्शक बनकर रह जातीं।

2. परिणाम– वह अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का नेतृत्व नहीं कर पातीं, जिससे झाँसी की रक्षा कर पाना मुश्किल हो जाता।

3. ऐतिहासिक महत्त्व– उनकी वीरता, जो उन्हें इतिहास में अमर बनाती है, वह युद्ध कौशल से ही उपजी थी।

उनके साहस का ही उदाहरण है कि उन्होंने अपने गोद लिए पुत्र को पीठ पर बाँधकर, अंग्रेजों के साथ वीरतापूर्वक अंतिम साँस तक लड़ाई लड़ी।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

(क) कमल ककड़ी – कल, कड़ी, मल, मकड़ी, लक (लाख या किस्मत)।

(ख) राजमहल – राम, जल, हल, जरा, हज, महल, राज।

18. गौरा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** निर्मम, गोवत्सों, कर्मनिष्ठा, पंखुड़ियों, नामकरण, सौंदर्य, विशालता, कृतज्ञता।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. गाय का महादेवी के घर आरती उतारकर स्वागत हुआ।

2. गौरा गाय के पेट में सुई चले जाने के बाद बीमार रहने लगी थी।
3. गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए लेखिका ने पशु-चिकित्सक से इलाज कराया। वे मोटे इंजेक्शन भी शल्य-क्रिया के समान दुखदायी होते।
4. मुझे कपट और आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। सुई खिलाने का क्या तात्पर्य है?
5. "अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ।" गौरा मृत्यु को प्राप्त हो गई।

- **लिखित**

1. पाठ के अनुसार गौरा के पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लंबी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो पंखुड़ियों जैसे कान, लंबी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ, सब कुछ साँचे में ढला हुआ सा था।
2. गौरा को देखते ही मेरी गाय पालने के संबंध में दुविधा निश्चय में बदल गई।
3. वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू के पुतले जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे, मानों गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया–'लालमणि'।
4. जब गौरा की सुन्दर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चली और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा तब लेखिका ने समझकर उसके अंत का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक ही इच्छा थी कि उसके अन्त समय में मैं उसके पास उपस्थित रह सकूँ। अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कन्धे पर रखा वैसे ही वह एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और मेरी बाहों से सरक कर धरती पर आ गया। कदाचित सुई ने हृदय को बेधकर बंद कर दिया।
5. 'गौरा' पाठ का मुख्य संदेश है कि हमारा देश गोपालक है और हमेशा रहेगा। हमें अपने धार्मिक गोवंश की रक्षा करनी चाहिए, तथा ऐसे दरिंदों को पुलिस के हवाले कर देना चाहिए।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 2. (ग)
3. (ख) 4. (क)

- **सोच-समझकर**

1. लेखिका ने यह पंक्ति अपने देश के गोपालकों की स्थिति देखकर दुखी होकर कही थी। महादेवी वर्मा ने उन लोगों के प्रति अपनी वेदना व्यक्त की है जो गाय पालते तो हैं पर उनका सही तरीके से ख्याल नहीं रखते। वह चाहती थीं कि देश के सभी गोपालक अपने पशुओं के प्रति संवेदनशील बनें और उनकी उचित देखभाल करें, क्योंकि गाय को करुणा की मूर्ति माना जाता है।
2. 'गौरा' पाठ की मूल संवेदना गाय के प्रति मानवीय करुणा और प्रेम को उजागर करना है। यह पाठ बताता है कि गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि करुणा और वात्सल्य की सजीव मूर्ति है। पाठ का मुख्य उद्देश्य यह संदेश देना है कि मनुष्यों को पशुओं के प्रति संवेदनशील और दयालु होना चाहिए, उन्हें केवल उपयोगिता के आधार पर नहीं आँकना चाहिए।
3. गौरा पाठ में गाय के बाहरी सौंदर्य के साथ-साथ मानवीय भावनाओं का गहरा चित्रण किया गया है। लेखिका ने गौरा के सुन्दर रंग-रूप का वर्णन किया है, लेकिन कहानी का मुख्य केंद्र गौरा की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुई मानवीय संवेदनाएँ हैं।

   गौरा की मृत्यु ने लेखिका और अन्य लोगों को गहरे तक प्रभावित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पशुओं के साथ भी भावनात्मक संबंध स्थापित हो सकते हैं। यह पाठ पशु-प्रेम और करुणा के मानवीय मूल्यों को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

पंक्तियों पर चर्चा–

1. इस पंक्ति का अर्थ है कि तेज रफतार या चंचलता में अपना एक अलग आकर्षण और सौंदर्य होता है, लेकिन जो ठहराव, शालीनता ओर गरिमा धीमी या मंथर गति (जैसे गौरा की चाल) में होती है, वह तेज गति में नहीं मिल सकती। गौरा की धीमी चाल में एक विशेष प्रकार का माधुर्य और शांति थी।
2. लेखिका के अनुसार, हिरन की आँखे हमेशा चौकन्नी और विस्मय (हैरानी) से भरी रहती हैं, जैसे वे किसी अनजाने डर में हों। इसके विपरीत, गौरा (गाय) की आँखों में कोई भय या अचंभा नहीं था। उसकी आँखों में अपनों के प्रति गहरा प्रेम, शांति और एक अटूट भरोसा (आत्मीय विश्वास) झलकता था।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

  1. प्रियदर्शन 2. गौरा 3. चमक
  4. लालमणि 5. गंगा

- **सही-गलत**

  1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

निरीह पशु-पक्षियों के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके प्रति दया, प्रेम और करुणा का भाव रखें।

1. हमें उन्हें भोजन-पानी और सुरक्षित आश्रय प्रदान करना चाहिए। हमें उन्हें किसी भी प्रकार की पीड़ा या शोषण का शिकार नहीं बनाना चाहिए। उनकी प्रजातियों के संरक्षण और उनके प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा के लिए प्रयास करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सा सेवाओं का ध्यान रखना चाहिए।
2. यह एक व्यक्तिगत विचार-आधारित प्रश्न है और इसका उत्तर हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है।

   यदि मुझे ग्वाला को दंड देने का अधिकार दिया जाता, तो मैं उसे पशुओं के प्रति क्रूरता के दुष्परिणामों के बारे में शिक्षित करता और उसे पशु-कल्याण केन्द्र में कुछ समय के लिए सेवा करने का दंड देता ताकि वह जिम्मेदारी और दया का महत्व समझ सके।
3. यह एक व्यक्तिगत पसंद पर आधारित प्रश्न है।

   यदि मैं कोई पशु पालना चाहता तो मैं एक कुत्ता पालता। मैं उसकी देखभाल के लिए उसे नियमित रूप से पौष्टिक भोजन देता, समय पर पशु चिकित्सक के पास ले जाता, उसे घुमाने ले जाता और उसे पर्याप्त प्यार व समय देता।

- **भाषा आधारित**

1. अनेकार्थक दो-दो शब्द लिखो–

(क) गो – गाय, किरण

(ख) कंठ – गर्दन, आवाज

(ग) गुरु – दीर्घ, शिक्षक

(घ) घन – बादल, लोहे का हथोड़ा

2. निम्न के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द

(क) धेनु, गौ, गैया

(ख) पुत्र, बेटा, सुत

(ग) मरण, मौत, स्वर्गवासी

(घ) दुग्ध, पय, क्षीर

3. वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटिए–

	उद्देश्य	विधेय
(क)	गौरा	प्रतिदिन बारह सेर दूध देती थी।
(ख)	ग्वाला	ने गौरा को गुड़ में सुई खिला दी।
(ग)	मेरी छोटी बहिन	ने मुझे एक गाय दी।
(घ)	गौरा	ने एक सुंदर बछड़े को जन्म दिया।

4. शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए–

(क) दूध देने वाली

वाक्य प्रयोग– कामधेनु गाय पयस्विनी होती है।

(ख) दिखने में प्रिय

वाक्य प्रयोग– गौरा वास्तव में ही बहुत प्रियदर्शन थी।

(ग) बिना आभा (चमक)

वाक्य प्रयोग– गौरा की सुंदर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चलीं।

(घ) निष्ठुर

वाक्य प्रयोग– अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ।

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

19. जरूरत बनी मुसीबत

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक के अनुसार प्लास्टिक की जरूरत अब मुसीबत बन गई है।
2. बारिश में पॉलिथीन से अटी पड़ी नालियों के कारण हुई थी।
3. प्लास्टिक के प्रति लोगों, संस्थाओं और व्यवस्थाओं का गुस्सा फूट रहा है।
4. प्लास्टिक का दूसरा पक्ष पर्यावरण के लिए खतरनाक है। इसके निर्माण में प्रयोग होने वाले कई खतरनाक रसायन सम्पूर्ण जीव-जगत के लिए बेहद खतरनाक हैं।
5. थैलेट्स नामक एक जहरीले रसायन का उपयोग प्लास्टिक के खिलौने को नरम बनाने के लिए किया जाता है।

- **लिखित**

1. प्लास्टिक हमारे लिए बहुपयोगी और बहु-उद्देशीय ऐसे है, क्योंकि यह सस्ता, हल्का, मजबूत, टिकाऊ, लोचदार और हर तरह के सामान ले जाने में आरामदायक है।
2. प्लास्टिक पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है क्योंकि इसमें प्रयोग होने वाले जहरीले रसायन संपूर्ण जीव-जगत के लिए बेहद हानिकारक हैं।
3. थैलेट्स नामक रसायन असमय जन्म, समय पूर्व प्रौढ़ता, दाँत संबंधी बीमारी या फिर मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
4. फोटोडिग्रेडेबल सूर्य की रोशनी में गलने वाले (बायोडिग्रेडेबल) जैविक रूप से सड़ने वाले और रासायनिक रूप से गलाकर दोबारा प्रयोग में लाये जाने वाले पॉलिथीन के सफल प्रयोग किये जा चुके हैं।
5. अलेगजेंडर पार्वस ने 1862 में लंदन में एक प्रदर्शनी में पहली बार मानव निर्मित प्लास्टिक का प्रदर्शन किया था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. प्लास्टिक खून एच. आई. वी. संक्रमण से मुक्त खून होता है।
2. चिकित्सा के क्षेत्र में प्लास्टिक का सबसे नया और अविश्वसनीय योगदान है– प्ला. स्टिक खून का निर्माण।
3. प्लास्टिक खून प्लास्टिक के अणुओं से बनता है, जिसमें लौह अणु हैं, जो कि लाल रक्त कोशिकाओं की तरह शरीर में ऑक्सीजन ले जाने का काम करेगा। साथ ही यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में हल्का है और ज्यादा टिकाऊ है। इसे ठण्डे स्थान पर रखने की जरूरत भी नहीं है।
4. प्लास्टिक खून का निर्माण प्लास्टिक अणुओं से होता है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (क)
3. (ग)
4. (ग)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. वर्तमान समय में प्लास्टिक हमारे लिए बेहद उपयोगी सिद्ध हो रहा है किन्तु इसका दूसरा पक्ष पर्यावरण के लिए खतरनाक साबित हो रहा है। यदि हम अपने स्वार्थपूर्ण रवैये को अपनाते रहे तो अपने भविष्य को भयावहता की ओर धकेल रहे हैं।
2. प्लास्टिक चिकित्सा, पैकेजिंग, परिवहन, निर्माण कार्य, कृषि, इलेक्ट्रॉनिक तथा घरेलू सामान के निर्माण में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध

हो रही है। यह हल्की, टिकाऊ और सस्ती होने के कारण व्यापक रूप से प्रयोग की जाती है।

3. प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने के लिए बांग्लादेश ने सबसे पहले प्लास्टिक बैग पर प्रतिबन्ध लगाया था। डब्लिन ने भी 95 फीसदी प्लास्टिक बैग पर प्रतिबंध लगाया है। वहीं अमेरिका ने भी प्लास्टिक खिलौनों पर प्रतिबंध लगाया है। इस प्रकार लगातार इसके प्रयोग को कम करने में प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. आशय – इस पंक्ति का आशय है कि प्लास्टिक उपयोगी और सुविधाजनक है, परन्तु इसका उपयोग पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है।

2. आशय – पॉलिथीन नालियों और जल निकास मार्गों को अवरुद्ध कर देती है जिससे पानी भर जाता है और बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. आशय – खेती-बाड़ी के क्षेत्र में भी प्लास्टिक का उपयोग किया जा रहा है; जैसे– पाइप लाइनों, प्लास्टिक सीटों आदि के रूप में।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. नकली बाढ़ 4. खून, अणुओं
2. बांग्लादेश 5. एच. आई. वी.
3. परिवहन, प्लास्टिक

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मैं प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करूँगा–

- मैं कपड़े और जूट के थैलों का उपयोग करूँगा।
- मैं केवल प्लास्टिक पर निर्भर नहीं रहूँगा, बल्कि बचने का प्रयास करूँगा।
- प्लास्टिक की वस्तुओं का पुनःचक्रण करूँगा।
- लोगों को जागरूक करूँगा।

2. प्लास्टिक विहीन दुनिया होने पर कठिनाइयाँ और लाभ–

कठिनाइयाँ–

- सस्ती पैकिंग वाली सामग्री का अभाव
- चिकित्सा और तकनीकी उपकरणों में कठिनाई।
- वस्तुओं का वजन बढ़ सकता है।

लाभ–

- पर्यावरण प्रदूषण में कमी।
- नालियों के अवरोधों की समस्या समाप्त।
- पशुओं और जलीय जीवों की सुरक्षा।
- भूमि की उर्वरता में सुधार।

- **भाषा आधारित**

1. (क) महँगा (घ) असली
(ख) विपक्ष (ङ) ज्यादा
(ग) मृत्यु (च) गर्म

2.

शब्द		उपसर्ग		प्रत्यय
(क) बहुपयोगी	–	बहु	+	उपयोगी
(ख) बेहद	–	बे	+	हद
(ग) प्रतिबंध	–	प्रति	+	बंध
(घ) सुविधा	–	सु	+	विधा
(ङ) दुर्घटना	–	दुर्	+	घटना
(च) प्रसाधन	–	प्र	+	साधन

3.

शब्द	मूलशब्द		प्रत्यय
(क) लोचदार	लोच	+	दार
(ख) तापरोधी	ताप	+	रोधी
(ग) खतरनाक	खतरा	+	नाक
(घ) जहरीला	जहर	+	ईला
(ङ) निर्भरता	निर्भर	+	ता

4. (क) तबाही – भारी विनाश

वाक्य प्रयोग– बाढ़ ने गाँव में भारी तबाही मचा दी।

(ख) प्रतिबंध – रोक

वाक्य प्रयोग – सरकार ने प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया है।

(ग) लागत – खर्च

वाक्य प्रयोग – पर्यावरण की हानि उसकी लागत से कहीं अधिक है।

(घ) परचम – झण्डा

वाक्य प्रयोग – भारत ने अपनी जीत का परचम स्टेडियम में लहराया।

(ङ) सहज – सरल

वाक्य प्रयोग – मानव का प्रकृति से प्रेम करना उसकी सहज भावना है।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. प्लास्टिक की रोकथाम से संबंधित नारे –
   - प्लास्टिक हटाओ, प्रकृति बचाओ।
   - कपड़े का थैला अपनाओ, पर्यावरण स्वच्छ बनाओ।
2. **समाचार पत्र हेतु लेख**
   शीर्षक–पर्यावरण के लिए हानिकारक प्लास्टिक

प्लास्टिक आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है, किन्तु यह पर्यावरण को हानि पहुँचाती है। यह आसानी से नष्ट नहीं होती तथा भूमि, जल और वायु को प्रदूषित करती है। इससे बाढ़ जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। पशु-पक्षियों की मृत्यु का कारण बनती हैं। अत: हमें इसका सीमित उपयोग करना चाहिए और पर्यावरण अनुकूल विकल्प अपनाना चाहिए।

जाँच प्रश्नपत्र-1

1. **प्रश्नों के उत्तर–**

   (क) भारतभूमि की तुलना ध्रुवतारा से इसलिए दी है कि विश्व में हर क्षेत्र में भारत भी एक दिशा निर्धारक का कार्य कर रहा है।

   (ख) चेतन को मौसाजी ने ले जाने के लिए मौसी को माँ जैसी बताकर राजी किया।

   (ग) एलिश ने झोंपड़ी में स्थित लोगों की सहायता उनकी सेवा करके और अपनी यात्रा के सारे पैसे उन पर खर्च करके की।

   (घ) वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू को उसके पिता के बारे में बताया कि तेरे पिता परोपकारी और नेक इंसान थे।

   (ङ) पेड़ टहनी के कटने पर एक प्राणी की तरह रोते हैं।

2. **सही विकल्प–**

   (क) (iv), (ख) (iii), (ग) (i), (घ) (iii)।

3. **पंक्ति पूर्ति–**

   (क) आँचल, (ख) मौका, (ग) तीर्थयात्री, (घ) चौंकाने, (ङ) भाग्यशाली

4. **किसने, किसने कहा?**

   (क) किसने कहा ? – माँ ने
   किससे कहा ? – चेतन से

   (ख) किसने कहा ? – चेतन ने
   किससे कहा ? – रजत से

   (ग) किसने कहा ? – एलिश ने
   किससे कहा ? – एफिम से

   (घ) किसने कहा ? – एक बच्चे ने
   किससे कहा ? – एलिश से

   (ङ) किसने कहा ? – एलिश ने
   किससे कहा ? – एफिम से

5. 1. चेतन भावुक हो गया था। इसलिए होंठ हिलाकर रह गया।

   2. मोबाइल पर चेतन का भावुक चेहरा (चेहरे पर चमक) साफ दिख रही थी।

   3. सब मिलकर नाश्ता करने लगे।

   4. मौसी ने एक पकौड़ी उठाकर चेतन के मुँह में रख दी।

6. **विलोम शब्द–** दुर्भाग्य, नश्वर, मृत्यु, अनेक, बदबू, सूखा, लाभदायक, शत्रु।

7. **एक शब्द–** (क) माली, (ख) जलचर, (ग) हंस, (घ) धर्मोपदेशक

8. **समास विग्रह–**

   (क) राष्ट्र का पति – तत्पुरुष समास

   (ख) अंग का रक्षक – तत्पुरुष समास

   (ग) घोड़े पर सवार – तत्पुरुष समास

   (घ) नौ रात्रियों का समूह – द्विगु समास

9. **पर्यायवाची –** (क) समुद्र, जलधि (ख) पर्वत, गिरि (ग) आकाश, गगन (घ) वायु, पवन।

जाँच प्रश्नपत्र-2

1. **प्रश्नों के उत्तर–**
   (क) मकर संक्रांति के समय मौसम में ठंड कम होने लगती है और दिन बड़े होने लगते हैं।
   (ख) अरुणा ने बाढ़ पीड़ितों की दिन रात सेवा की, उन्हें भोजन और कपड़े बाँटे और उनके बच्चों की देखभाल की।
   (ग) लेखक ने गोमती नदी में हिमालय की छाया देखी।
   (घ) सभी भारतीय लोगों ने अपने मन में देश की आजादी और उन्नति की ठान रखी थी।
   (ङ) प्लास्टिक मिट्टी में गलता नहीं है, जिससे प्रदूषण फैलता है। ये नालियों को रोक देता है और पशुओं द्वारा खाये जाने पर उनकी मौत का कारण बनता है।
2. **सही विकल्प–**
   (क) (iii), (ख) (i), (ग) (i), (घ) (iv)।
3. **पंक्ति पूर्ति–**
   1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓)।
4. **सप्रसंग–** यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'तरंग' से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' से ली गयी हैं।
   व्याख्या– इन पंक्तियों में बताया गया है कि रानी लम्बीबाई वीरगति को प्राप्त हो गयी हैं और अब चिता ही उनकी दिव्य सवारी है। उनका तेज (आत्मा) ईश्वर के तेज में मिल गया है। वे केवल 23 वर्ष की थीं, पर उनका साहस देखकर लगता था जैसे वे कोई अवतारी शक्ति हों। वे हमें आजादी का रास्ता दिखाने और जाग्रत करने आयी थीं। बुंदेलखंड के लोगों से हमने सुनी है कि रानी लक्ष्मीबाई ने मर्दों की तरह बहादुरी से युद्ध लड़ा था।
5. **प्रत्यय व मूल शब्द**

	मूलशब्द		प्रत्यय
(क)	लोच	+	दार
(ख)	ताप	+	रोधी
(ग)	खतरा	+	नाक
(घ)	जहर	+	ईला
(ङ)	निर्भर	+	ता

6. **विलोम शब्द–** विष = अमृत, आरंभ = अंत, रोशनी = अंधेरा, जैविक = अजैविक, व्यथित = प्रसन्न, महिला = पुरुष।
7.

	उद्देश्य	विधेय
(क)	गौरा	प्रतिदिन बारह सेर दूध देती थी।
(ख)	ग्वाला ने	गौरा को गुड़ में सुई खिला दी।
(ग)	मेरी छोटी बहन ने	मुझे एक गाय दी।
(घ)	गौरा ने	एक सुंदर बछड़े को जन्म दिया।

8. **मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग–**
   (क) **अर्थ–** साफ मना कर देना
   वाक्य प्रयोग– जब मैंने तन्मय से अपनी किताब माँगी, तो उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
   (ख) **अर्थ–** संदेह होना
   वाक्य प्रयोग– राम और श्याम की फुसफुसाहट सुनकर मुझे लगा कि दाल में कुछ काला है।
   (ग) **अर्थ–** मुसीबत आना
   वाक्य प्रयोग– पिताजी की नौकरी छूटते ही घर पर दुख की काली घटा छा गयी।
   (घ) **अर्थ–** बुरी तरह हारना
   वाक्य प्रयोग– खेल के मैदान में विपक्षी टीम को मुँह की खानी पड़ी।
9. **उचित विराम चिह्न**
   राजा– इस संबंध में आज लोगों को कुछ कहना है?
   (कोई कुछ नहीं बोलता है। सभी सिर झुका लेते हैं।)
   राजा– अभी तो सभी कह रहे थे– हमारी सुनो, हमारी सुनो! अब हवा एवं जल की दलील सुनकर सबकी बोलती बंद हो गई। खैर, आपने अपनी शिकायत के प्रत्युत्तर में हवा का दुख सुन लिया है। वायु को दूषित होने से बचाना आपके ही हाथ में है। जल और वायु को मित्र बनाएँ और अपने जीवन को सुखी-समुन्नत करें।
10. **दो-दो पर्यायवाची शब्द**
    (क) पथ – रास्ता, मार्ग
    (ख) पहाड़ – पर्वत, गिरि
    (ग) मानव – मनुष्य, इंसान
    (घ) यात्री – पथिक, मुसाफिर